महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुखपत्र

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

वर्ष : ६३ **अंक** : ०७

दयानन्दाब्द: १९७

विक्रम संवत्: चैत्र कृष्ण २०७७

कलि संवत्: ५१२१

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,१२१

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा,

केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-मन्त्री, परोपकारिणी सभा

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-३०० रु.

पाँच वर्ष-१२०० रु.

आजीवन (१५ वर्ष) -३००० रु.

एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर

द्विवार्षिक-९५ पाउण्ड/१५२ डॉलर

त्रिवार्षिक-१४० पाउण्ड/२२५ डॉलर

आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.

एक प्रति - ३ पाउण्ड

एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

RNI. No. ३९५९ / ५९

i jki dkjh

अप्रैल प्रथम २०२१

अनुक्रम

०१. डॉ. भीमराव अम्बेडकर, आर्यसमाज...	सम्पादकीय	०४
०२. अग्नि सूक्त-०२	डॉ. धर्मवीर	०८
०३. वैदिक पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित नया साहित्य		१०
०४. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	११
०५. बशारत या भविष्य-वाणी	पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय	१६
०६. महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज...	डॉ. बलवीर आचार्य	२२
०७. संस्था की ओर से...		३१
०८. 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति		३४

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये।
किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर, आर्यसमाज और दलितोद्धार

महर्षि दयानन्द और उन द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने अपने सामाजिक लक्ष्यों में '**जन्मना जाति-पाँति उन्मूलन**' और '**दलितोद्धार**' को एक प्रमुख लक्ष्य के रूप में निर्धारित किया। डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर के जीवन का लक्ष्य भी यही था। इस प्रकार दोनों में एक न्यूनतम लक्ष्य की दृष्टि से घनिष्ठ समानता है। इन लक्ष्यों को आज भी अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सकता है, यदि दोनों समाज पारस्परिक समझ, तालमेल और सहयोग से चलें। यह बात कहने की आवश्यकता इसलिये जान पड़ती है, क्योंकि दोनों का लक्ष्य समान होते हुए भी उनकी विचारसरणि और कार्य-पद्धति में कुछ भिन्नताएँ घर कर गयी हैं। यद्यपि उन्हें पारस्परिक समझ, सूझबूझ, उदारता, तालमेल, सद्भाव और सहयोग से पाटा जा सकता है।

यह तथ्य रेखांकित किये जाने योग्य है कि आर्यसमाज के उक्त लक्ष्य-निर्धारण में जो मानवता, महानता, उदारता और परोपकार-भावना निहित है, उसे कोई भी विचारशील व्यक्ति स्वीकार किये बिना नहीं रह सकता। यह भी कि डॉ. अम्बेडकर अपने लक्ष्यों को लेकर जब कार्यक्षेत्र में उतरे, उससे बहुत पहले अर्थात् आधी शताब्दी पूर्व ही आर्यसमाज इन लक्ष्यों का निर्धारण और उन पर कार्यान्वयन प्रारम्भ कर चुका था। आर्यसमाज के कारण डॉ. अम्बेडकर को जाति-पाँति विरोधी और दलितोद्धार के पक्ष में एक बना-बनाया वातावरण मिला था। एक दलित बालक 'भीमराव' को 'डॉ. अम्बेडकर' बनाने सें उस वातावरण और आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। डॉ. अम्बेडकर को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश भेजनेवाले और छात्रवृत्ति तथा आर्थिक सहायता देनेवाले दोनों राजा, बड़ौदा के सयाजीराव गायकवाड़ और कोल्हापुर के शाहू महाराज, आर्यससमाजी थे। आर्यसमाज के प्रगतिवादी विचारों के कारण ही उन्होंने सहयोग किया था।

ऐसे समय में, जब कोई इन बातों को सोचता भी नहीं था, महर्षि दयानन्द द्वारा मानव-समानता का उद्घोष और दलितों के सोये हुए सम्मान और अधिकारों को प्राप्त कराने का विचार देना तथा उसके लिए प्रयास करना, महर्षि की नवीन एवं क्रान्तिकारी देन थी। महर्षि दयानन्द एक सम्पन्न परिवार के औदीच्य ब्राह्मण थे। प्रारम्भ में आर्यसमाज में दीक्षित होनेवाले आर्यजन भी प्राय: सवर्ण थे। 'दलितोद्धार' और 'जाति-पाँति उन्मूलन' में इनका कोई निजी हित नहीं था। आर्यसमाज कोई राजनीतिक दल भी नहीं था जो वोट और नोट की इच्छा रखता। आर्यसमाज एक समाजसेवी संगठन था, जिसने सेवा, त्याग और नि:स्वार्थभाव से दलितोद्धार का कार्य किया। तुलनात्मक विवेचन से यह स्थिति और स्पष्ट हो जाती है। आर्यसमाज दलितों के एक नि:स्वार्थ संरक्षक और हितैषी के रूप में प्रस्तुत हुआ, जबकि डॉ. अम्बेडकर दलितों के एक नेता के रूप में सामने आये। आर्यसमाज परपीड़ा (दलित-पीड़ा) से व्यथित था, जबकि डॉ. अम्बेडकर आत्मपीड़ा और आत्मवर्गीय पीड़ा से व्यथित थे। आर्यसमाज ने सवर्णों के संस्कारों को प्राप्त करने का प्रयास किया, संस्कारों को बदलकर और दलितों में आत्मगौरव उत्पन्न कर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया, जबकि डॉ. अम्बेडकर ने, विरोध और प्रतिक्रिया का मार्ग अपनाया। आर्यसमाज ने सर्वसमानता और सर्वसौहार्दभाव का सन्देश दिया, जबकि डॉ. अम्बेडकर ने सवर्णों के प्रति आक्रोश के स्वर को मुखरित किया। आर्यसमाज न तो जातिवादी उत्पीड़क था और न दलितों के समान पीड़ित था। वह एक तटस्थ समाजसेवी संगठन था। किन्तु वह तटस्थ नहीं रह सका, क्योंकि वह दलितवर्ग के साथ हो रहे व्यवहार को अमानवीय मानता था, अत: उसने प्रभावशाली सवर्ण वर्ग को छोड़कर पीड़ित वर्ग का पक्ष लिया।

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज द्वारा प्रारम्भ किये गये 'जाति-पाँति-उन्मूलन' और 'दलितोद्धार' के सुधार-कार्य साहसिक और क्रान्तिकारी कार्य थे। महर्षि दयानन्द का जब आविर्भाव हुआ और आर्यसमाज का जब प्रवर्तन हुआ, तब भारत के सवर्ण-समाज के रक्त में जाति-पाँति

का विष उग्ररूप में व्याप्त था। उस समाज में जाति-पाँति, ऊँच-नीच, छूत-अछूत के विरुद्ध बात करना एक दु:साहस था और दलितोद्धार का प्रयास करना अपने लिए विपत्ति मोल लेना था। किन्तु फिर भी आर्यसमाज घबराया नहीं। आरम्भ में कितने ही आर्यजन दलितों का उद्धार करते-करते जाति-बहिष्कृत और ग्राम-बहिष्कृत होकर स्वयं दलित घोषित हो गये। मुटहवा (जम्मू) के महाशय रामचन्द्र जैसे कितने ही शहीद हो गये। आर्यसमाजियों ने दलितों के लिए स्वयं बड़े-बड़े कष्ट सहे किन्तु दलितों को कष्ट नहीं होने दिया और दलितोद्धार के कार्यक्रम को रुकने नहीं दिया। भारी संघर्ष करके दलितों को मन्दिरों में प्रवेश दिलाया। वेद, यज्ञ, यज्ञोपवीत आदि धार्मिक अधिकार प्रदान किये। साथ खानपान, रहन-सहन का वातावरण प्रदान किया। पाठशालाएँ, स्कूल, कॉलेज, गुरुकुल आदि में उन्हें बिना किसी भेदभाव के पढ़ाया। अब तक आर्यसमाज हजारों दलित युवक-युवतियों को पढ़ा-लिखाकर विद्वान् बना चुका है और आज भी बना रहा है। प्रचार, उपदेश, लेखन, साहित्य-रचना द्वारा आज भी उनके पक्ष में वातावरण का निर्माण कर रहा है। आर्यसमाज ने दलितोद्धार के कार्यक्रमों को देश के कोने-कोने में लागू करके एक व्यापक जाग्रति पैदा की। परिणामस्वरूप दलितों में आत्मविश्वास और निर्भयता लौटी, एक नयी चेतना आयी। आर्यसमाज के इस आन्दोलन से महात्मा गाँधी और डॉ. अम्बेडकर भी प्रभावित और प्रोत्साहित हुए। उन्होंने इस कार्यक्रम को राजनीतिक आश्रय दिया। इन सबके मिले-जुले प्रयत्नों का यह परिणाम निकला कि आजाद भारत में यह कार्यक्रम भारत सरकार का एक कार्यक्रम और संविधान का एक अंग बन गया। सामाजिक जागरण के बिना कोई भी सामाजिक कानून सफल नहीं हो सकता। इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय भी आर्यसमाज द्वारा उत्पन्न सामाजिक जाग्रति को जाता है। आर्यसमाज द्वारा किये गये दलितोद्धार की कहानी, उस लम्बे संघर्ष की कहानी है, जो कुछ सवर्णों ने सवर्णों के साथ किया था। इस संघर्ष को नज़र अन्दाज करना अकृतज्ञता की पराकाष्ठा कही जायेगी।

आर्यसमाज की एक और विशेषता रही है। डॉ. अम्बेडकर ने अतीत को जाति-पाँति तथा दलितों के पतन का कारण मानकर तत्कालीन वेद-शास्त्रों, संस्कृति-सभ्यता, इतिहास-परम्परा आदि को नष्ट करने और उससे कटने का नारा दिया, जबकि आर्यसमाज ने उसी अतीत को आधार बनाकर, उसी से प्रमाण प्रस्तुत कर जाति-पाँति आदि को अवैदिक और अमानवीय घोषित किया। दलितों को अतीत से सम्मानजनक ढंग से जोड़कर उन्हें मुख्यधारा में सम्मिलित किया। आर्यसमाज की यह स्थापना मनोवैज्ञानिक और तर्क की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी, क्योंकि आर्यसमाज ने जातिवादी समाज के आधार को ही धराशायी कर दिया। जातिवादी समाज के पास अब कुतर्क और दुराग्रह के सिवाय कोई रास्ता नहीं रहा और वह निरुत्तर होकर बगलें झाँकने लगा। आर्यसमाज यदि ऐसा नहीं करता तो डॉ. अम्बेडकर कितनी भी सुधार की बात करते, जातिवादी समाज उनकी काट में अतीत को एक पुष्ट प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करता रहता। डॉ. अम्बेडकर द्वारा दलितों को अतीत से कटने का अर्थ दलितों की अतीत की पराजय को स्वीकार करना है। उन्हें पलायन के बजाय अतीत के अधिकारों पर दावा करना चाहिए था। किसी समाज का परम्परागत रूप से सहवासी समाज से पूरी तरह कटना स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक नहीं है। आर्यसमाज ही एकमात्र ऐसा संगठन है जिसने अपने तर्कों से भारत के समग्र अतीत पर दलितों का समान अधिकार घोषित कर उन्हें मूलत: 'सवर्ण और अदलित' माना है। आर्यसमाज ही एकमात्र वह संस्था है जिसने अपने शोध, तर्क एवं प्रमाणों से यह सिद्ध किया है कि दलित और सवर्ण मूलत: भाई-भाई हैं, क्योंकि वे एक ही वंश-परम्परा से सम्बन्ध रखते हैं। इस प्रकार दलितों के लिए नि:स्वार्थ भाव से किया गया आर्यसमाज का कार्य बहुमुखी, आधारपूर्ण, प्रेरक, प्रभावशाली एवं अग्रगामी है।

आर्यसमाज द्वारा दलितोद्धार : डॉ. अम्बेडकर के मन्तव्य

डॉ. अम्बेडकर ने आर्यसमाज द्वारा किये गये दलितोद्धार की कुछ घटनाओं का अपने ग्रन्थों में उल्लेख किया है-

(क) ''कुछ आर्यसमाजियों ने कुछ अस्पृश्यों को

ऊँची जाति का बनाने की कोशिश की और उन्हें पहनने के लिए ऊँची जाति का प्रतीक अर्थात् जनेऊ दिया। लेकिन अधिकांश सनातनियों को यह भी बर्दाश्त नहीं हुआ।''

(ख) ''आर्यसमाजियों ने जम्मू राज्य के मीरपुर जिले के मोइला गाँव में भगत हरिचन्द की शुद्धि की और उसे जनेऊ पहनने के लिए दिया।''

(ग) ''इन लोगों ने (हरिजनों ने) महात्मा गाँधी और स्वामी श्रद्धानन्द के अछूतोद्धार आन्दोलन से प्रेरित होकर जनेऊ पहन लिये थे और रोजाना सन्ध्योपासना करनी शुरु कर दी थी। लेकिन गढ़वाल के सवर्ण हिन्दुओं को यह सहन नहीं हुआ।''

(घ) ''गुरदासपुर जिले में बरहमपुर कस्बे के पास रमानी गाँव।...अस्पृश्यों ने शान्तिपूर्वक कहा- महाराज, आप हमसे क्यों नाराज हैं? आपके खुद के भाई आर्यसमाजियों ने ये जनेऊ हमें पहनने के लिए दिये हैं ओर कहा है कि हम हमेशा इस जनेऊ की रक्षा करें।'' (अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय, खण्ड ७, पृष्ठ ७८-७९)

(ङ) '' मैं मानता हूँ कि स्वामी दयानन्द व कुछ अन्य लोगों ने वर्ण के वैदिक सिद्धान्त की जो व्याख्या की है, वह बुद्धिमत्तापूर्ण है और घृणास्पद नहीं है।'' (वही, खण्ड १, पृ. ११९)

(च) ''स्वामी श्रद्धानन्द दलितों के सबसे बड़े और पूर्णत: सच्चे समर्थक थे। (डॉ. अम्बेडकर, राइटिंग्स् एण्ड स्पीचिज्, वॉल्यूम ९, पेज २३)''

उपर्युक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट होता है कि डॉ. अम्बेडकर प्राचीन वर्णव्यवस्था की वास्तविकता से भलीभाँति परिचित थे और उसे मन के किसी कोने में स्वीकार करते थे। उनके उपर्युक्त उल्लेख यह सिद्ध करते हैं कि वर्णव्यवस्था एक अच्छी व्यवस्था थी, जो जन्मना जातिव्यवस्था से भिन्न थी। उसमें जातिव्यवस्था जैसे दोष भी नहीं थे। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार यह कर्मणा व्यवस्था पुष्यमित्र शुंग (१८५ ईसा पूर्व) तक चलती रही थी। उसके पश्चात् जन्मना जाति-व्यवस्था ने उसका स्थान ले लिया। इसका यह भी अभिप्राय निकला कि १८५ ईसा पूर्व तक भारत का साहित्य, धर्मशास्त्र, समाजव्यवस्था आदि किसी भी प्रकार की आपत्ति से रहित थे। आर्यसमाज भी अधिकांशत: इन्हीं निष्कर्षों को प्रस्तुत करता है। इस प्रकार आर्यसमाज और डॉ. अम्बेडकर के उक्त मन्तव्यों में समानता है। डॉ. अम्बेडकर ने आर्यसमाज के दलितोद्धार के महत्त्व को और वैदिक वर्णव्यवस्था केसिद्धान्त को खुले शब्दों में स्वीकार किया है।

दलितों का अन्य समाज से अलग-थलग होकर रहना कदापि हितकर नहीं है। समाज से जुड़े रहकर अपने अधिकारों को प्राप्त करना अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे सामने है। जो लोग धर्मान्तरित होकर अन्य धर्मों को ग्रहण कर गये, वे उन अधिकारों, सुख-सुविधाओं से वंचित रह गये, जिन्हें हिन्दुओं में रहते हुए आज कानूनी रूप से प्राप्त किया जा रहा है। डॉ. अम्बेडकर द्वारा किये गये विरोध के कारण दलित समाज में जो समस्त अतीत के विरोध की प्रवृत्ति उपजी है और जो पनप रही है, वह परिणाम में अनर्थकारी है।

आर्यसमाजियों और दलितों का वर्तमान कर्त्तव्य

१. डॉ. अम्बेडकर द्वारा किया गया विरोध तत्कालीन परिस्थितिजन्य विरोध था। आज परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। तत्कालीन परिस्थितियाँ या तो क्षीण हो चुकी हैं या क्षीण हो रही हैं। ऐसी स्थिति में दलितों को अपने हितों और अधिकारों के प्रति तो सतर्क रहना चाहिए किन्तु समस्त अतीत, धर्मशास्त्रों, महापुरुषों के सुनिश्चित विरोध की प्रवृत्ति को नहीं पनपने देना चाहिए। बुद्धिजीवियों का कर्त्तव्य बनता है कि उस प्रवृत्ति को वर्ग-विद्वेष का रूप धारण करने के खतरे से रोका जाना चाहिए।

२. आर्यसमाज दलितों का एक सामाजिक सम्बल है। आर्यसमाज अपने उद्देश्य के अनुसार दलितों को समाज में सम्मान और समानता दिलाने के लिए सदैव प्रयासरत रहा है और रहेगा। आर्यसमाज ने दलितों के लिए नि:स्वार्थ प्रहरी और संरक्षक की भूमिका निभाई है। दलित समाज को आर्यसमाज में मिलकर सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहिए।

३. आर्यसमाज, दलित समाज का स्वाभाविक मित्र और हितैषी है। आर्यसमाज उन्हें ऊँच-नीच, छूत-अछूत, भेदभाव से रहित रहन-सहन का वातावरण और उन्नति के समान अवसर प्रदान करता है। दलित समाज आर्यसमाज

के साथ मिलकर समानता, सद्‌भावना और सह-अस्तित्व के आधार पर रह सकता है। आर्यसमाज में दलितोद्धार की भावना, इच्छाशक्ति और कार्ययोजना है। दोनों समाजों को जातिवादी समाज को बदलने के लिए सम्मिलित प्रयास करने चाहिए और आर्यसमाज द्वारा प्रस्तुत मान्यताओं को हितसाधक मानकर दलितों को उन्हें स्वीकार करना चाहिए।

४. आर्यसमाज ने मनुस्मृति आदि ग्रन्थों पर शोध करके उनहें प्रक्षेपरहित रूप में प्रस्तुत किया है। शोध से यह सिद्ध हुआ है कि प्रक्षिप्त श्लोक ही दलित विरोधी हैं। मौलिक श्लोक दलितों के हितसाधक हैं और उन्हें तर्क का सम्बल प्रदान करने वाले हैं। दलितों को मनुस्मृति जैसे ग्रन्थों की निन्दा और विरोध का परित्याग कर उनके तर्कों का अपना आधार सुदृढ़ करने में उपयोग करना चाहिए और उन तर्कों और प्रमाणों से जातिवादी शक्तियों को निरुत्तर और निरुत्साहित करना चाहिए।

दलित समाज में एक विडम्बना दिखाई पड़ती है। वह मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्रों तथा सवर्णों का जाति-पाँति-वादी के रूप में विरोध करता है किन्तु स्वयं उसी भावना से ग्रस्त है। वह सवर्णों से तो यह उम्मीद करता है कि वे दलितों के साथ समानता का व्यवहार करें किन्तु दलित समाज अपने से निम्न वर्गों के साथ वही ऊँच-नीच, छूत-अछूत का व्यवहार करता है। उनके साथ सहभोज और विवाह-सम्बन्ध स्थापित नहीं करना चाहता। जब तक दलित समाज स्वयं जाति-पाँति की भावना से ग्रस्त है तब तक उसके विरोध और आक्रोश को कदापि सार्थक और औचित्यपूर्ण नहीं माना जा सकता। उन्हें अपने अन्त:करण में भी झाँकना चाहिए।

निराशा के नहीं, आशावादी संकेत हैं ये

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इस देश में हजारों वर्षों से जातिवादी उग्र वातावरण था। पीढ़ी-दर-पीढ़ी वे संस्कार सुदृढ़ होते गये हैं। संस्कार शीघ्र और सहजता से नहीं बदलते। वे धीरे-धीरे और आंशिक रूप में बदलते हैं। आर्यसमाज और ऐसी ही अन्य संस्थाओं के कारण उनमें पर्याप्त परिवर्तन आया है। सामाजिक जाग्रति बढ़ी है। जाग्रति के कारण जाति-पाँति-विरोधी कार्यक्रम सरकार के कार्यक्रम बने हैं, संविधान के अंग बने हैं। आज उन्हें कानूनी संरक्षण भी मिल गया है। आज समाज में जातिवादी उग्रता क्षीण हो गयी है, और हो रही है। सहभोज और रहन-सहन में दिन प्रतिदिन सामान्यता आती जा रही है। पुराने समय में अन्तरजातीय विवाह का दण्ड प्राणदण्ड हुआ करता था किन्तु आज अन्तरजातीय विवाह बहुत हो रहे हैं और वे दम्पती समाज में सामान्य वातावरण में जी रहे हैं। सवर्णों और दलितों के विवाह भी हो रहे हैं। धीरे-धीरे इनका और विस्तार होगा। ये सब आशावादी संकेत हैं। यदि आर्यसमाज और दलित समाज के लोग परस्पर तालमेल रखकर सामाजिक लक्ष्यों का सम्पादन करें तो जातिरहित समाज के लक्ष्य को प्राप्त करने की गति और बढ़ जायेगी, महर्षि दयानन्द और डॉ. अम्बेडकर का सपना अधिक शीघ्रता से साकार हो सकेगा।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

उन्नति का कारण

जो मनुष्य पक्षपाती होता है। वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।

सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है। सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। **महर्षि दयानन्द सरस्वती**

आर्ष ग्रन्थों का पठन

महर्षि लोगों का आशय, जहाँ तक हो सके वहाँ तक सुगम और जिसके ग्रहण में समय थोड़ा लगे इस प्रकार का होता है और क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहाँ तक बने वहाँ तक कठिन रचना करनी जिसको बड़े परिश्रम से पढ़के अल्प लाभ उठा सकें, जैसे पहाड़ का खोदना, कौड़ी का लाभ होना और अन्य ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना, बहुमूल्य मोतियों का पाना।

अग्नि सूक्त-०२

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर

लेखिका - सुयशा आर्य

प्रिय पाठक! परोपकारी पिछले कई वर्षों से आपकी सेवा में डॉ. धर्मवीर जी के वेद प्रवचनों को प्रकाशित कर रहा है। गत अंक में मृत्यु सूक्त का अन्तिम व्याख्यान प्रकाशित हुआ। आप सभी ने उक्त सूक्त को उत्सुकतापूर्वक पढ़ा। आप सबकी इस वेद-जिज्ञासा को ध्यान में रखकर शीघ्र ही यह पुस्तक रूप में भी प्रकाशित कर दिया जायेगा। इस अंक (मार्च प्रथम) से ऋग्वेद के प्रथम सूक्त 'अग्निसूक्त' की व्याख्यान माला प्रारम्भ की जा रही है। प्रवचनों को लेखबद्ध करने का कार्य डॉ. धर्मवीर जी की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सुयशा जी ही कर रही हैं। -सम्पादक

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।

हम इस वेद-प्रवचन की शृंखला में ऋग्वेद के पहले मण्डल के पहले सूक्त की चर्चा कर रहे हैं। भूमिका के रूप में हमने देखा कि वेद हमारे जीवन से क्यों जुड़ा है, क्योंकि जो कुछ संसार मनुष्य के लिए बना है उस संसार के बारे में उसे ज्ञान हो तो वह उसका उपयोग कर सकता है, इसलिये जितना आवश्यक संसार का होना है, उतना ही आवश्यक संसार का ज्ञान होना है। इसमें विचारणीय प्रश्न यह है कि ज्ञान पृथक् से होता है और वस्तु पृथक् है, जबकि ज्ञान और वस्तु में सम्बन्ध है, क्योंकि ज्ञान उस वस्तु का ही है, उस वस्तु के बारे में है। किन्तु वस्तु को देखने मात्र से, कोई चीज सामने होने भर से हमको उसका कुछ पता नहीं चलता। प्रारम्भ में तो कोई न कोई निश्चित रूप से बताता है। हम उसे होते हुए देखते हैं, तब हमें पता लगता है। कुछ अनुमान होता है। इसलिये दो बात बिल्कुल साथ-साथ चलेंगी-यदि वस्तु है तो वस्तु का ज्ञान। क्या ऐसा हो सकता है कि वस्तु दी गयी हो और ज्ञान न दिया गया हो? यदि ऐसा हो तो वस्तु का देना व्यर्थ हो जायेगा। या ऐसा हो सकता है कि वस्तु कोई और दे और ज्ञान किसी और से प्राप्त हो तो ज्ञान और वस्तु के बीच में सम्बन्ध नहीं हो सकता। निष्कर्ष यह निकलता है कि ज्ञान भी वही देगा जो वस्तु को देगा। उस वस्तु के गुण-दोष, हानि-लाभ जो भी हैं, वह वही बता सकता है, जिसने उसका निर्माण किया है। इसलिये संसार में संसार को देखकर केवल हमको इसकी जानकारी हो जाए ऐसा सम्भव नहीं है और यदि ऐसा होता तो हर व्यक्ति के साथ एक जानकारी का प्रसंग भी बनता। लेकिन यहाँ तो उल्टा है, यहाँ तो हर व्यक्ति को कोई दूसरा व्यक्ति जानकारी दे रहा है, तब उसे वह जानकारी प्राप्त हो रही है और यही पीढ़ी दर पीढ़ी हम देखते आ रहे हैं, अनुभव करते आ रहे हैं।

ऋषि दयानन्द ने इस विषय में एक तर्क दिया है। वह कहते हैं कि जो लोग यह मानते हैं कि मनुष्य अपने ज्ञान से उन्नति कर लेगा, या धीरे-धीरे उसका ज्ञान विकसित हो रहा है इसलिये किसी ज्ञान देनेवाले या किसी निमित्त की आवश्यकता नहीं है। ऋषि दयानन्द कहते हैं कि यदि ऐसा होता तो जिनको ज्ञान का अवसर नहीं मिला, जो जंगल में रहते हैं, पीढ़ियों से वनों में रहते आ रहे हैं, पहाड़ों में रहते हैं, उनका ज्ञान भी विकसित होना चाहिये। उनके पास केवल उतना ज्ञान होता है जितने से उनकी आजीविका चलती है, जितना वे अपनी रक्षा के लिये उचित मानते हैं, उसके आगे उनको कोई ज्ञान नहीं होता। इस दृष्टि से जब विचार करते हैं तो यह मानना पड़ता है कि इस सृष्टि का जो मूल है वहीं से सृष्टि आई तो वहीं से ज्ञान भी आयेगा। इस सृष्टि को देनेवाला ही सृष्टि का ज्ञान भली प्रकार दे सकता है।

मन्त्र में जो बात कही गयी है कि इस ज्ञान से सम्पूर्ण संसार को समझना है। संसार के बनानेवाले को भी इसी ज्ञान से समझना है और संसार का उपयोग भी इसी ज्ञान से करना है। संसार को समझना, संसार के निर्माता को समझना और इस संसार का उपयोग करना, इन तीनों का लाभ उस एक ज्ञान से होगा। एक उपनिषद् में इसकी चर्चा आती है

कि अथर्वा ऋषि को ब्रह्मा जी ने जो ज्ञान दिया- **ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता।** यहाँ कहा गया है कि ब्रह्मा संसार का पहला व्यक्ति है जो इस संसार के बारे में बात कर रहा है। यहाँ दो विशेषण दिए हैं, वह कर्त्ता और गोप्ता है। वह ईश्वर तो है नहीं, व्यक्ति है, फिर वह कर्त्ता कैसे हुआ? वह इस व्यवस्था का बनाने वाला है, इस सामाजिक संरचना का प्रारम्भ करनेवाला है और गोप्ता, अर्थात् रक्षा करने वाला है, उसी ने सब नियम पहले बनाये हैं, तो **स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठाम् अथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह।** उसने यहाँ एक विशेषण दिया है- सः ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठाम्। वस्तु अनन्त हैं, उनके गुण-कर्म-स्वभाव अनन्त हैं, तो ज्ञान भी अनन्त प्रकार का होगा। इससे दो बातें सिद्ध होती हैं, यदि हमारे लिये वस्तु अनन्त हैं और उनके लिये ज्ञान भी अनन्त कोटि का है तो जो वस्तु के गुण हैं वे कर्त्ता के भी होंगे। जो ज्ञान का स्रोत है वह भी उसी तरह से अनन्त होगा। उसके ज्ञान की, कर्म की, उसकी रचना की भी सीमा नहीं है। अतः उपरिलिखित वाक्य में कहा जो इस संसार का रचनाकार है, निर्माता है, निश्चित रूप से उसे जानने की विद्या बाकि विद्याओं से बड़ी और गहन होगी। **ब्रह्मविद्याप्रतिष्ठाम्, सर्वविद्याप्रतिष्ठाम्**- वह सब विद्याओं का प्रतिष्ठा स्थान है, मूल है। उसने वह ज्ञान अपने शिष्य को, अपने बड़े बेटे को दिया- **अथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय। अथर्वणे यां प्रवदेत ब्रह्माऽथर्वा तां पुरोवाचाङ्गिरे ब्रह्मविद्याम्। स भारद्वाजाय सत्यवाहाय प्राह भारद्वाजोङ्गिरसे परावराम्।** तो जो अथर्वा को ज्ञान मिला उसने अंगिरा को दिया और अंगिरा ने भारद्वाज को दिया, भारद्वाज ने अंगिरस् को दिया।

अंगरिस् के पास जब ज्ञान था उस समय उसके पास एक व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करने के लिये आता है, उसका नाम शौनक है और जो शौनक है उसके लिए शास्त्र में विशेषण दिया है- **शौनको ह वै महाशालः** यह बहुत सम्पन्न व्यक्ति था, जिसके बहुत बड़े-बड़े महल थे। लेकिन जब वह ज्ञान के लिये आया तो शिष्य बनकर आया। **शौनको ह वै महाशालोऽङ्गिरसं विधिवदुपसन्नः पप्रच्छ**- विधिवत् शिष्य-भाव से आकर उसने पूछा-कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीति। कि आप तो मुझे वह बताओ जिसके जान लेने से सब कुछ समझ में आ जाता है। यह जो संसार है, यह सब कुछ हमारी समझ में आ जाए यदि हम उसको समझ लें। शौनक को उपदेश देते हुए जो पंक्ति कही है- **द्वे विद्ये वेदितव्य इति ह स्म यद् ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैव अपरा च।** कहता है कि ऐसी चीज जाननी है जिसके जानने से सब जान लिया जाता है, उसे नाम दिया **परा** और **अपरा**। **परा यया तदक्षरमधिगम्यते।** एक वेद दोनों विद्याओं का स्रोत है, परा का भी और अपरा का भी। पढ़ने से ऐसा लगता है जैसे अपरा का जो वेद है वह कोई दूसरी विद्या है जिससे परा को जाना जाता है। ऐसा नहीं है उसने क्योंकि ज्ञान दिया है वेद के रूप में तो इससे संसार भी जाना जायेगा, संसार का रचनाकार भी जाना जायेगा और उपयोग भी जाना जायेगा। ऐसा नहीं हो सकता कि परा के लिये कोई अलग शास्त्र है और अपरा का कोई अलग शास्त्र है। कहा **तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो अथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति। अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते।** संसार को समझने के लिये, संसार में काम आने वाली बातों को जानने के लिये तो हमें वेद का जानना आवश्यक है ही और क्योंकि संसार के बनानेवाले को, इसमें रहनेवाले को, इसकी व्यवस्था चलानेवाले को भी हम साथ-साथ जानते हैं तो हमारी वह जो दृष्टि है उसका नाम है परा, **यया तदक्षरमधिगम्यते।**

यहाँ ईश्वर को **अक्षर** कहा, क्योंकि **क्षर** कहते हैं नाशवान् को, **अक्षर** कहते हैं जो नष्ट नहीं होता है। पाणिनि ने कहा- **अक्षरं नक्षरं विद्यादश्नोतेर्वासरोऽक्षरम्।** अक्षर आप इसको इसलिये कहते हैं कि यह कभी नष्ट नहीं होता है। यह प्रकाशित होता है अन्तर्भूत हो जाता है, दिखाई देता है, नष्ट होता हुआ लगता है, किन्तु सर्वांग में, सम्पूर्ण रूप में कभी नष्ट नहीं होता। यदि नष्ट हो जाए तो उसे उत्पन्न कौन करे। नियम यह है कि जो चीज है ही नहीं, वह पैदा ही नहीं की जा सकती। पैदा की जा रही है तो निश्चित रूप से होगी। पैदा करना मतलब कारण रूप में विद्यमान वस्तु को कार्य रूप में ले आना, केवल इसी का नाम उत्पन्न करना है। हम उत्पन्न करना समझते हैं अभाव से भाव में लाना।

अभाव से भाव में लाना सम्भव नहीं है। आज तक कोई वस्तु अभाव से भाव में बदली नहीं जा सकी। जो भाव है उसका अभाव नहीं होता, जिसका अभाव है उसका भाव होना नहीं होता। जो नहीं है, वह कभी होता नहीं है, जो है वह कभी न हो ऐसा भी नहीं होता। इसलिये इस नियम को जानते हुए यदि हम प्रयोग करते हैं कि वह बना, वह पैदा हुआ, वह दिखाई दिया तो उसका केवल इतना अभिप्राय होता है कि वह वस्तु कारण रूप में थी, वह कार्यरूप में आई और नष्ट होने का मतलब होता है कार्यरूप में थी, कारणरूप में चली गई। वेद के रूप में हमको यह ज्ञान परा और अपरा दोनों विद्याओं के लिये प्राप्त हुआ है।

संसार को, संसार के उपयोग को और संसार के निर्माता को हम एक शास्त्र से जानते हैं या जान सकते हैं। हमें वेद की प्राप्ति क्यों आवश्यक है, यह बहुत सहज समझ में आ जाता है और इसके साथ समझने की बात है कि जब वेद का कोई मन्त्र हमारे देखने और पढ़ने में आता है तो हमें यह ध्यान रखना होगा, हमें यह जानना होगा कि केवल हम जो जान सकते हैं या जिसे हम जानना चाहते हैं, उतने को ही यह मन्त्र नहीं बता रहा है, मन्त्र के अन्दर जो जानने की सम्भावनायें हैं वे सारी की सारी इसमें विद्यमान हैं। जो हम नहीं जान सकते वह भी इससे जाना जाता है और जो हमने नहीं जाना है वह भी जाना जा सकता है। और जो वस्तु हम जानना चाह रहे हैं उसको भी ध्यान में रखकर के मन्त्रों पर विचार करते हैं। मन्त्रों की बात करते हैं तो हमारा दृष्टिकोण बहुत व्यापक हो जाता है और हमें उसे जानने-समझने के लिये एक विशाल दृष्टि की आवश्यकता पड़ती है। हम सामान्य अध्ययन से, सामान्य जानकारी से, सामान्य बुद्धि से सामान्य चीज तो प्राप्त कर सकते हैं किन्तु असामान्य चीज को यदि हम पाना चाहते हैं तो हमें दृष्टि भी उतनी ही विशाल रखनी होगी।

वैदिक पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित नया साहित्य

१. महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ **पृष्ठ :** २१६ **मूल्य :** १५०

यह पुस्तक महर्षि के सभी शास्त्रार्थों का संग्रह है। यद्यपि सभा यह संग्रह दयानन्द ग्रन्थमाला में भी प्रकाशित कर चुकी है, पुनरपि पाठकों की सुविधा के लिए इसे पृथक पुस्तक रूप में भी प्रकाशित किया गया है।

२. महर्षि दयानन्द की आत्मकथा **पृष्ठ :** ८० **मूल्य :** ३०

महर्षि दयानन्द ने अलग-अलग समय व अवसरों पर अपने जीवन सम्बन्धी विवरण का व्याख्यान किया है। जिनमें थियोसोफिकल सोसाइटी को लिखा गया विवरण, भिड़े के बाड़े में दिया गया व्याख्यान एवं हस्तलिखित विवरण आदि हैं। इन सभी विवरणों को ऋषि के हस्तलिखित मूल दस्तावेजों सहित सभा ने एकत्र संकलित किया है।

३. काल की कसौटी पर **पृष्ठ :** ३०४ **मूल्य :** २००

यह पुस्तक डॉ. धर्मवीर जी द्वारा लिखित सम्पादकीय लेखों का संकलन है। विषय की दृष्टि से इस पुस्तक में उन सम्पादकीयों का संकलन किया गया है, जिनमें धर्मवीर जी ने आर्यसमाज के संगठन को मजबूत करने एवं ऋषि के स्वप्नों के साथ-साथ उन्हें पूरा करने का मन्त्र दिया है।

४. कहाँ गए वो लोग **पृष्ठ :** २८८ **मूल्य :** १५०

आर्यसमाज या आर्यसमाज के सांगठनिक ढांचे से बाहर का कोई भी ऐसा व्यक्ति जो समाज के लिए प्रेरक हो सकता है, उन सबके जीवन और ग्रहणीय गुणों पर धर्मवीर जी ने खुलकर लिखा है। उन सब लेखों को इस पुस्तक के रूप में संकलित किया गया है।

५. एक स्वनिर्मित जीवन - मास्टर आत्माराम अमृतसरी **पृष्ठ :** १७४ **मूल्य :** १००

आर्यसमाज के आरम्भिक नेताओं की सूची में मास्टर आत्माराम अमृतसरी का नाम प्रमुख रूप से आता है। प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा लिखी अमृतसरी जी की यह जीवनी पाठकों को आर्यसमाज के स्वर्णयुग से परिचित कराएगी।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

हरियाणा के आर्यों की ऐतिहासिक सभा- छः मार्च को रक्तसाक्षी पं. लेखराम के बलिदान पर्व पर हरियाणा के आर्यों ने एक ऐतिहासिक तथा अविस्मरणीय सभा का आयोजन करके एक नया इतिहास रचा। हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय मास्टर रामपाल जी ने सभा की अध्यक्षता की। पाँच प्रदेशों के आर्यों ने इसमें उपस्थित होकर युवा आर्यवीरों के पुरुषार्थ को फलीभूत किया। लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जन्मस्थान मोही पंजाब के ऋषिभक्तों के इसमें भाग लेने से हरियाणा सभा की शान को चार चाँद लग गये।

सभा के प्रधान श्रीमान् रामपाल जी के मैंने अब तक कई व्याख्यान सुने हैं, परन्तु उस दिन के भाषण की तो रंगत ही बहुत न्यारी-प्यारी थी। आर्यसमाज की करोड़ों रुपये की सम्पदा पर अधिकार जमानेवालों से आपने कैसे स्थान-स्थान पर टक्कर लेकर कब्ज़ाधारियों के पंजों से आर्यसमाज की सम्पत्ति छुड़ाई-बचाई, यह गौरवपूर्ण इतिहास सुनाकर आपने आर्यवीरों में आशा और उत्साह का सञ्चार कर दिया।

आर्यसमाज में पहली बार दो महत्त्वपूर्ण मौलिक व खोजपूर्ण पुस्तकों का विमोचन एक आर्यप्रकाशक श्री अजयकुमार जी आर्य से करवाकर हरियाणा के हमारे सुयोग्य कर्मठ आर्यवीरों ने एक नया इतिहास रच डाला और आर्यसमाज के इतिहास को एक नई दिशा भी दी। आज पर्यन्त आर्यप्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन नेता, विद्वान् तथा सत्ताधारी तो करते रहे। आर्यसमाज के कई प्रकाशकों ने धर्म-रक्षा में सिर कटाये, बलिदान दिये और अभियोगों की चक्की में पीसे गये परन्तु किसी प्रकाशक को किसी ग्रन्थ के विमोचन करने का अवसर न दिया गया।

यह मत समझिये कि यह निर्णय मेरा था अथवा 'पं. चमूपति के उर के उद्गार और अंगार' ग्रन्थ के प्रकाशक प्रसिद्ध समाजसेवी श्री जितेन्द्रकुमार जी एडवोकेट बठिण्डा का था। आर्यवीरों ने मुझसे भी परामर्श तो किया, परन्तु यह उनका सर्वसम्मत निर्णय था।

मैंने अपने व्याख्यान में श्री अजय जी की सेवाओं का उल्लेख करते हुये बताया कि लाला गोविन्दराम जी के इस पौत्र ने कुछ वर्ष पूर्व सत्यार्थप्रकाश पर चलाये गये अभियोग में सहअभियुक्त बनकर दृढ़ता-धीरज का परिचय देकर अग्नि-परीक्षा उत्तीर्ण की। बर्मिंघम इंग्लैण्ड में एक मुसलमान गवेषक श्री शहरयार ने आर्यसमाज के शास्त्रार्थों पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। उसके शोधग्रन्थ का निर्णय आर्यसमाज के विरुद्ध जा रहा था कि उसने परोपकारी में छपे शास्त्रार्थ विषयक मेरे कुछ लेख तथा अजय जी से प्राप्त मेरी कुछ पुस्तकों को जब ध्यान से पढ़ा तो उसने अपने शोध के निष्कर्ष में आर्यसमाज की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उसके ऐसे पत्र श्री अजय जी के और मेरे पास सुरक्षित हैं।

रोहतक की इस सभा में घण्टों चले कार्यक्रम में शान्तिपाठ तक श्रोता डट के बैठे रहे। नये तथा पुराने भजनोपदेशकों ने तो अपने गीतों से समय बाँध दिया। बड़ी आयु के तो दो ही व्याख्यानदाता थे। श्री मास्टर रामपाल जी तथा इन पंक्तियों का लेखक। शेष सारे वक्ता आर्यजाति के तपे परखे समाजसेवी युवक थे। प्रत्येक ने अपनी वाणी से वहाँ अमिट छाप छोड़ी, मानो पं. लेखरामजी के बलिदानपर्व पर उस दिन पं. लेखराम ने सबकी वाणी में अपने जादुई प्रभाव का चमत्कार दिखाया।

पं. बस्तीराम जी, चौधरी पीरूसिंह, पं. रामपत, प्रो. रामसिंह जी, सिद्धान्ती जी, भक्त फूलसिंह जी, माता लाडकुँवर, स्वामी सर्वानन्द जी को जन्म देनेवाले हरियाणा का आर्यसमाज आज भी धर्मरक्षा के अरमान लेकर तन तानकर आगे बढ़ रहा है, यह सबको पता चल गया। प्रसिद्ध युवक विद्वान् इतिहासज्ञ श्री पं. राजेशार्य आटा के वेदप्रवचन से समारोह का यज्ञ सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज के एक और युवक इतिहासकार गवेषक श्री धर्मेन्द्र जी जिज्ञासु को सोच-समझकर वीर भगतसिंह के सम्बन्ध में एक गम्भीर विषय दिया गया। समय सीमा

के भीतर आपने प्रमाणों की झड़ी लगाकर जब बोलना आरम्भ किया तो एक समां बँध गया। आपके व्याख्यान को सुनकर प्रो. रामसिंह जी, पं. शान्तिप्रकाश, ठाकुर अमरसिंह और पं. शिवकुमार की याद ताजा हो गई।

हमारे निडर समर्पित दो कर्मवीर श्री जगदीश आर्य तथा आर्यवीरों के प्रेरणा स्रोत श्री अभय आर्य कार्यक्रम का सञ्चालन करते हुये अपनी टिप्पणियों से जन-जन में जीवन का सञ्चार भी कर रहे थे। अनेक आर्यवीर बहुत उत्साह व अनुशासन से अपना-अपना दायित्व निभा रहे थे। श्री इन्द्रजित् देव जैसे वयोवृद्ध आर्यपुरुष तथा श्री अभय आर्य जी के ज्ञानवृद्ध पिताजी का आशीर्वाद प्राप्त करके युवकों की, मस्तों की टोली धन्य-धन्य हो गई।

हरियाणा के ये आर्यवीर अब क्या करेंगे?- परोपकारी एक नियमित रूप से 'समरसता दिवस' मनाने की देशप्रेमियों, जातिसेवकों को प्रेरणा देता चला आ रहा है। विशेषरूप से हरियाणा से यह आन्दोलन आरम्भ करना होगा। महात्मा भक्त फूलसिंह ने दीन, दरिद्र, दलित वर्ग तथा नारी-रक्षा के लिये जीवन वार दिया। उनका बलिदान-पर्व सरकार की ओर से 'समरसता दिवस' के रूप में मनाया जाना चाहिये। दक्षिण भारत में वीर शिरोमणि शहीद श्यामभाई के नाम पर 'समरसता दिवस' हो। मध्यप्रदेश में हुतात्मा मेघराज के नाम पर हो।

हरियाणा की आर्य युवाशक्ति तो इस कार्य के लिये कटिबद्ध हो चुकी है। कोरोना को जाने दो। यह आन्दोलन गाँव-गाँव जाकर छेड़ना होगा। सभाप्रधान मास्टर रामपाल जी ने हुंकार भर दी है। मेरे भागदौड़ के दिन गये। लेखन-कार्य पूरी शक्ति से करते हुये भक्त फूलसिंह के बलिदान पर्व को 'समरसता दिवस' के रूप में मनाने का आन्दोलन आरम्भ होते ही मैं भी प्रतिमास चार-चार, पाँच-पाँच दिन इसके लिये दूँगा। हरियाणा के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हमें इस आन्दोलन को पहुँचाना है।

भापड़ौदा स्मारक- एक और करणीय कार्य हरियाणा में करने का आर्यवीर निर्णय कर चुके हैं। देश के एकमेव संन्यासी महात्मा स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज पर सेना में विद्रोह फैलाने का दोष लगाकर गम्भीर अभियोग चलाया गया। श्रीमहाराज ने भापड़ौदा ग्राम में इसके लिये गुप्त बैठक की थी। सरकार ने वायसराय के सीधे आदेश से जब आपको बन्दी बनाया तो यह पता ही न लग रहा था कि सरकार उन्हें ले कहाँ गई। महाशय कृष्ण सरीखे प्रभावशाली पत्रकार आर्यनेता लाख यत्न करके भी यह पता न लगा सके। बड़े यत्न से चौधरी छोटूराम जी यह पता लगा सके। वर्षों तक यह केस चलता रहा। अहीर, गुर्जर, जाट, रोड़ और राजपूत आदि सब क्षत्रिय-वृत्ति के वर्गों को हम स्वामी जी का स्मारक बनाने के लिये प्रेरित करें। हम यह तो नहीं कहते कि गगनचुम्बी स्मारक हो, करोड़ों का बजट हो, परन्तु इस स्मारक का कुछ तो रूप होना चाहिये। कृतघ्नता का पापी देश को न बनने दिया जावे। मुझसे जो कुछ हो सकेगा, मैं भी इसके लिये करूँगा।

अपनी प्रामाणिकता की परम्परा बचावें- आर्यविद्वान् अनेक अनुसन्धान तथा ठोस प्रमाण देने के लिये अपना उदाहरण आप थे। दुर्भाग्य से कुछ वर्षों से मनपसन्द बातें लिखनेवालों ने कपोलकल्पित घटनायें व निराधार प्रमाण देने की जो भूल पर भूल की है व कर रहे हैं उससे आर्यसमाज की शोभा व प्रतिष्ठा घटती जा रही है। एक श्रीमान् ने मुन्शी इन्द्रमणि जी के जन्म के दो सन् सम्वत देकर बार-बार यह दुष्प्रचार किया कि उनकी मृत्यु सन् १९२१ में हुई। मैंने इसका प्रतिवाद करते हुये लिखा कि पं. लेखराम जी ने सन् १८९३ ई. में छपे अपने एक लम्बे लेख में मुंशी जी की मृत्यु की चर्चा तो की है, उनके जन्म और आयु का उल्लेख करते हुये उक्त लेखक की दूसरी बात भी झुठलाई है। मिर्ज़ा गुलाम अहमद ने भी मुंशी इन्द्रमणि की मृत्यु १८९३ ई. से पूर्व लिखी है।

ऋषिजी ने एक बार मुंशीजी को 'बुजुर्ग विद्वान्' भी लिखा। इससे स्पष्ट है कि उनका जन्म ऋषि से बहुत पहले हुआ, परन्तु हमारे कृपालु अपने इतिहास के ज्ञान पर अड़े रहे। मैंने कई मास पूर्व मुरादाबाद के श्री अमरनाथ जी को कुछ रिकॉर्ड देखकर पं. लेखराम के लेख की पुष्टि में कुछ स्रोतों से जानकारी प्राप्तकर सूचित करने को लिखा। वह तो अपने कामों में ही फँसे रहे। पं. कान्तिलाल जी ने उ.प्र. सभा व इधर-उधर के स्रोतों से अभी-अभी जो जानकारी मुझे भेजी है, वह मेरे सामने है। यह और भी हास्यास्पद है।

मैं इस पत्र के प्राप्त होने के कई मास पूर्व मेरठ के प्रसिद्ध आर्यपत्र 'आर्यसमाचार मासिक' के सन् १८९१ ई. के एक अंक से मुंशी इन्द्रमणि जी की मृत्यु की तिथि, उनके अन्तिम संस्कार और उनको दी गई श्रद्धाञ्जलि के समाचार की पुष्टि कर चुका हूँ। आर्यो! पं. लेखराम की परम्परा की रक्षा करते हुए कल्पित कथनों का डटकर प्रतिवाद किया करो। प्रामाणिकता से ही आर्यसमाज की शान है। इसकी रक्षा कीजिये।

इसका क्या प्रमाण है?- डॉ. सेवाराम जी आर्यसमाज के निष्ठावान् और जानेमाने विद्वान् सेवक हैं। श्री विरजानन्द जी आदि भी उन्हें निकट से जानते हैं। आपने दो-चार दिन पूर्व चलभाष पर मुझसे पूछा, ''पं. लेखराम जी आर्यसमाजी बनने से पूर्व मांसाहार भी कुछ समय करते रहे, ऐसा किसी आर्यनेता तथा विद्वान् ने नहीं लिखा, परन्तु आपने यह बात कैसे लिख दी है?''

डॉ. सेवाराम जी के प्रश्न का मैंने स्वागत करते हुये लिखा कि मैंने सन् १८९३ ई. में छपे पं. लेखरामजी के एक महत्त्वपूर्ण लेख के आधार पर ही ऐसा लिखा है कि आपने आर्यसमाज में प्रवेश करते ही मांसाहार का परित्याग कर दिया। यह लेख मैंने श्री अनिल आर्य के पुस्तकालय में सुरक्षित कर दिया है। पूज्य पं. शान्तिप्रकाश जी इस लेख की खोज करने पर अत्यन्त प्रसन्न हुये।

मूर्तिपूजा-प्रचार का आदेश मिला है- १३ फरवरी २०२१ का लिखा एक कृपालु का प्यार भरा पत्र पाकर मैं दंग रह गया। पत्र कहाँ से लिखा गया, यह तो लिखा नहीं। न ही पत्र-लेखक ने अपना नाम लिखा। 'भवदीय-भल्ला' समाप्ति पर लिखा है। आपका आदेश है, ''महर्षि की प्रतिमा (statue) लगवाने के आन्दोलन को समर्थन दें।'' पत्र की समाप्ति पर फिर लिखा है ''आप दयानन्द आश्रम में तो महर्षि का स्टेच्यू स्मारक बनवाने के लिये प्रयत्न करें। डी.ए.वी. संस्थाओं में भी महर्षि के स्टेच्यू लगवायें।''

पत्र लिखनेवाला कोई भी हो, कुछ भी हो आस्तिक नहीं है। पक्का नास्तिक और वैदिकधर्म-द्वेषी अवश्य है। आस्तिकता की, एक ईश्वरवाद और वेद-प्रचार की लहर चलाने में उसकी रुचि नहीं। जाति-पाँति मिटाना वह नहीं चाहता, इस श्रीमान् को तो जड़-पूजा के, मुर्दों और मर्दों के प्रचार की लगन लगी है। **अरे भाई! मुझे तोप के मुँह के आगे बाँध दो तो मैं तब यही कहूँगा कि मूर्तिपूजा वेद-विरुद्ध पाखण्ड है। ऋषि दयानन्द ईंट, पत्थर के स्मारक तक को मूर्तिपूजा की जड़ मानते थे।** पत्र लिखनेवाला ऋषि-मिशन के विध्वंस के लिये मुझसे मूर्तिपूजा का प्रचार करवाना चाहता है। सम्भव है आर्यसमाजियों को चिढ़ाने के लिये इस श्रीमान् ने यह शोशा छेड़ा हो।

संसार पर महर्षि की छाप और उनकी विलक्षणता- महर्षि दयानन्द के कार्यक्षेत्र में उतरने पर उस युग में कुछ मतवादी यह कहते थे कि अल्लाह सातवें आसमान पर है और दूसरा वर्ग कहता था कि नहीं वह चौथे आसमान पर है। काशी के, अयोध्या के मूर्तिपूजक उसे कैलाशपर्वत पर और कुछ क्षीरसागर में बताते थे। महर्षि ने हुंकार भरी और कहा परमात्मा सर्वव्यापक है। सारा संसार चौंक उठा। हैं! सर्वव्यापक का क्या अर्थ हुआ? ऋषि ने कहा, हम प्रभु में हैं और प्रभु हमारे भीतर है। कुछ और पूछा तो बोले, वह प्रभु हर कण में, प्रत्येक जन में, प्रत्येक मन में, हर तन में है। वह प्रत्येक दिशा में है। वह हमारे आमने-सामने है।

मत पन्थों का उपास्य संसार में नहीं था। युग पलटा। मत पन्थों के स्वर बदले। कुछ बोले वह हाज़िर नाज़िर है (सर्वव्यापक) और कुछ ने कहा **महीते कुल** (उसके घेरे में सब हैं) और पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषा में यह गूञ्ज सुनाई देने लगी 'God is omnipresent' अर्थात् ईश्वर सर्वव्यापक है। अरे भाई चौथे आसमान और सातवें आसमान की रट लगाते-लगाते आप लोग यह क्या कहने लग गये?

ऋषि दयानन्द के कथन का यह विश्वव्यापी प्रभाव क्या ऋषि की छाप मानी जावे या संसार का हृदय-परिवर्तन? बस इतनी दूरी रह गई है कि ऋषि वेद के आधार पर कहते हैं कि परमात्मा विश्व के भीतर-बाहर व्याप्त है और मतवादी उसे सर्वव्यापक हाज़िर-नाज़िर कहते हैं। संकोच दूर करके खुलकर एक दिन यह भी स्वीकार कर लेंगे कि वह विश्व के बाहर-भीतर व्यापक है। रह गई मूर्ति-पूजकों की बात वे तो हर कंकर को शंकर मानते चले आये हैं। सब कुछ ब्रह्म ही ब्रह्म है और यह जगत् मिथ्या है। कुछ भी नहीं। इन्हें एकेश्वरवादी बनाने के लिये महर्षि

दयानन्द सरीखे किसी ऋषि-महर्षि को पुन: जन्म लेकर विषपान करके महाबलिदान देना होगा।

अजमेर से एक कृपालु का पत्र- अजमेर से श्री मोहन जी उपाध्याय का प्यार भरा एक लम्बा पत्र इस 'तड़प-झड़प' को लिखते हुये मुझे प्राप्त हुआ। कृष्णगंज, विकासपुरी अजमेर निवासी के इस लम्बे पत्र के लिये मैं परोपकारी परिवार तथा मोहन उपाध्याय जी का आभारी हूँ। आपने परोपकारी में मेरे द्वारा भाईजी की आपबीती के अनुवाद व सम्पादन करने के सङ्कल्प पर प्रतिक्रिया देते हुये यह लिखा है कि 'आपबीती' एक प्रकाशक ने दिल्ली से प्रकाशित कर रखी है। भाईजी के साहित्य के बारे में भी कुछ विस्तृत जानकारी मुझे दी गई है। यह तो पत्र में नहीं लिखा कि वह मुझसे क्या चाहते हैं? क्या मैं इस ग्रन्थ पर श्रम न करूँ? इसका अनुवाद-सम्पादन मेरे द्वारा न हो?

मेरे कृपालु मोहन जी! मैंने बाल्यकाल से जब होश सम्भाली थी तब भाईजी की रंगत व भक्ति के कारण मेरा ईसाई अध्यापक मुंशी गहनामल बड़े प्रेम से मुझे कभी-कभी 'भाई परमानन्द' कहकर भी पुकारा करता था। रही उनके साहित्य की जानकारी की बात सो मैं क्या लिखूँ कि मैंने भाई जी का क्या-क्या पढ़ रखा है। मैं भाईजी के निधन तक कई वर्ष उनके 'हिन्दू' का पाठक रहा फिर संघ के हाथ में 'हिन्दू' आया तब इसके लिये लिखता भी रहा। भाईजी के दुर्लभ पचासों लेख केवल मेरे ही पास हैं। आप मेरे द्वारा सम्पादित भाईजी की 'आपबीती' का संस्करण देखकर दंग रह जायेंगे। किसी साहित्यकार का किया अनुवाद तो आपने पढ़ लिया। अब उनके एक सीधे-सादे आर्यसमाजी भक्त द्वारा सम्पादित उनकी 'आपबीती' पढ़कर बताना कि इसमें क्या विशेषता अथवा दोष आपको लगा।

आर्यसमाज के ही एक समर्पित धर्मसेवक, जातिसेवक पं. रतिराम जी शर्मा की पुण्यस्मृति में यह संस्करण कुछ ही मास में प्रकाशित होकर आपको प्राप्य होगा।

कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा- मुझ तक यह समाचार पहुँचा है कि वेद की निन्दा में एक लम्बे समय तक लेखनी चलाने में लगे रहे श्री आदित्यपालसिंह ने 'दयानन्द दिवाकर' नाम से एक नया ग्रन्थ छापा है। इसे सुना है लाला रामगोपाल जी शालवाले को (कहते हैं) समर्पित किया गया है। यह सुनकर मेरे कानों में ये दो पंक्तियाँ गूञ्जने लगीं। रात्रि को सोते समय इस समाचार के संस्कार से स्वप्न में मैंने लाला रामगोपाल जी को रोष से, जोश से आदित्यपाल जी को यह कहते हुये सुना-

मरने के बाद आय कैसे मेरे द्वार पर।
पत्थर पड़े सनम तेरे ऐसे प्यार पर।।

यह पुस्तक है क्या? पुरानी शराब नई बोतलों में। इधर-उधर से कतरनें एकत्र कर ब्राह्मसमाजियों की सामग्री नवयुग के पुराण के रूप में सजाकर परोस दी गई है। कहीं देवेन्द्र बाबू और कहीं घासीराम जी को घसीट-घसाट कर अपना विषैला मिथ्या पुराण वैदिक विचारधारा तथा ऋषि-जीवन को प्रदूषित करने के लिये परोस दिया गया है। यह पोथा है क्या? **कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा। भानमती ने कुनबा जोड़ा।।** जो आदित्यपाल एक मनगढ़न्त जन्मपत्री को ऋषि की जन्मतिथि के प्रमाण के लिये ले आया। वह अब नये सिरे से ऋषि-मिशन पर चढ़ाई कर रहा है। विरोधी वैदिकधर्म पर नित्य नये वार कर रहे हैं उनका प्रतिवाद करने का तो कभी साहस नहीं हो सका। अग्निवेश के समलैङ्गिकता मिशन पर कभी दो शब्द नहीं लिखे। मत-पन्थों के ग्रन्थों में जो वैदिकधर्म की रङ्गत की नई-नई सामग्री आई है, इससे अच्छा तो यही था कि उसको कुछ प्रसारित-प्रचारित कर करा देते। स्वामी पूर्णानन्द जी महाराज मेरठवालों ने आप लोगों के पुराण 'अज्ञात जीवनी' के खण्डन में जो कुछ लिखा था उसको प्रचारित प्रसारित कर देते। जमाते इस्लामी के 'कांति' में छपे कुछ भ्रामक लेखों का, कल्याण में यदाकदा छपनेवाले अवैदिक व पौराणिक विचारों पर कुछ लिखकर अन्धकार का संहार करते तो कुछ यश मिलता।

हरियाणा में रामपाल ने आर्यसमाज के विरोध में लम्बे समय तक विषवमन किया और करवाया। श्री आचार्य बलदेव जी से लेकर आचार्य अभय आर्य तक हमारे सुयोग्य आर्यवीरों ने गाँव-गाँव में आन्दोलन छेड़ा। कोर्टों की ख़ाक छानते रहे। न जाने लाला रामगोपाल जी का यह नवभक्त कहाँ लुका-छिपा रहा। हरियाणा के आर्यवीरों का साथ क्यों न दिया? मैंने तो पहले ही यह लिख दिया था

कि वेद ऋषि को प्राणों से भी प्यारे थे। जिसने एक वेदनिन्दक के साथ मिलकर वेद-निन्दा का घोर घृणित काम किया, वह ऋषि-जीवनी लिखने का ढोंग करते हुये अब 'अज्ञात जीवनी' वाले विषैले पुराण को फिर से 'दयानन्द दिवाकर' के नाम से प्रचारित करने का नया पाप करने जा रहा है।

झूठ की भी कोई तो सीमा होती है। ऋषिजी के जीवनकाल में सरकार ने किसी को महामहोपाध्याय की उपाधि न दी। इनके पुराण में महर्षि के मुख से एक बंगाली विद्वान् को महामहोपाध्याय कहलवाया गया।

ऋषि ने यत्र-तत्र जनता के धर्मानुराग की तो प्रशंसा की परन्तु किसी ने उनका सेवा-सत्कार किया तो फिर आशीर्वाद तो देते रहे, परन्तु भाट बनकर किसी की प्रशंसा व चाटुकारिता में कुछ नहीं कहा। इसके विपरीत मेरे पास एक दुर्लभ पुरानी उर्दू पत्रिका की फाइल में जोधपुर के श्री जगदीश सिंह जी गहलोत का एक लम्बा लेख है। आपने उसमें लिखा है कि महर्षि ने राजस्थान के राजों-महाराजाओं के चरित्र के सुधार के लिये, उनको भोग-विलास, परस्त्री गमन से बचाने के लिये उपदेश दिये, झकझोरा समझाया। खरी-खरी शासकों को और सामन्तों को सुनाईं। महर्षि के सत्य कथन, निर्भीक वाणी का मूल्य ऋषि को चुकाना पड़ा। ऐसा श्री जगदीश सिंह गहलोत ने लिखा है।

क्या मूल्य चुकाना पड़ा? आप लिखते हैं कि दुराचार, अनाचार आदि के विरुद्ध खरी-खरी सुनाने का मूल्य अपने प्राणों की बलि देकर चुकाना पड़ा। आदित्यपाल सिंह आदि ने उस निर्भीक वाणी वाले महर्षि दयानन्द से बंगाल में भोजन आदि की सेवा के लिये उनका गुणगान करवाया। कोई श्रेष्ठ साधु ऐसा नहीं करता। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को इस बोगस सामग्री में सबसे बड़ा खोट यही लगा कि ऋषि से बड़ाई करवाकर उनको ऋषि कोटि से गिराकर एक निम्न कोटि का बाबा इन लोगों ने बना दिया।

मेरा एक सीधा सा प्रश्न है कि बड़ी-बड़ी बातें बनाने वाले, कहानियाँ गढ़नेवाले दीनबन्धु आदि जिनको इस 'अज्ञात सामग्री' को सौंपने की बात कही गई वे मृत्युपर्यन्त ब्राह्मसमाजी ही बने रहे। क्यों जी! वे स्वयं आर्यसमाजी तथा वेदभक्त ऋषिभक्त क्यों न बने? आदित्यपाल जी के इस नये पुराण में मौरवी नरेश महाराजा वाघ द्वारा महर्षि दयानन्द के निन्दक पौराणिक शिष्टमण्डल को सुनाई गई खरी-खरी बातें नहीं मिलेंगी। यह है इस भद्रपुरुष की खोज का क्षेत्रफल! **अबोहर, पंजाब।**

एक आहुति अपने आचार्य के लिए........

ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की तन, मन, धन से सेवा करने वाले, उसे अपनी मातृवत् समझने वाले और यहाँ तक कि अपना जीवन समर्पित कर देने वाले डॉ. धर्मवीर आज अपना समस्त भार आर्य जनता अर्थात् अपने उत्तराधिकारियों पर छोड़ गये हैं। उन्होंने ऋषि के स्वप्नों को अपना कर्त्तव्य समझकर सभा को गगनचुंबी ऊँचाइयों तक पहुँचाया। अनेक नये प्रकल्प चलाये यथा-वैदिक गुरुकुल, गोशाला, आश्रम, अतिथियों के ठहरने व खान-पान की नि:शुल्क व्यवस्था आदि। उन्होंने जो-जो कार्य छेड़े उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में कभी न्यूनता न आने दी। परोपकारिणी सभा ऐसे पुत्र को प्राप्त कर गौरव का अनुभव करती है और बिछुड़कर शोकग्रस्त होने का भी। उनके द्वारा शुरु किये कार्य कभी शिथिल न पड़ें, इस कारण **सभा ने डॉ. धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रु. की स्थिर निधि बनाने का संकल्प लिया है,** जिससे कि धन धर्म के काम आ सके। इसमें सन्देह नहीं कि ये समस्त कार्य आर्य जनता के सहयोग से ही प्रारम्भ हो सके हैं और सहयोग से ही चल भी रहे हैं। इसलिये इसमें भी सन्देह नहीं कि सभा के इस संकल्प को आर्य जनता शीघ्र पूर्णता की ओर पहुँचा देगी और शायद उससे भी कहीं बढ़कर। यज्ञ तो हवि माँगता है। बिना हवि के यज्ञ की कल्पना भी क्या? बस देरी तो सूचित होने की है। हवि बनना तो आर्यों के खून में है, तन से, मन से अथवा धन से।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

कन्हैयालाल आर्य - मन्त्री

बशारत या भविष्य-वाणी

पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

टिप्पणी : मनुष्य जाति के इतिहास में धर्म को लेकर जो सबसे भयंकर भूल हुई है उसे इस्लाम कहा जा सकता है। मुहम्मद की शिक्षायें, चरित्र और वीरता निश्चित रूप से अरब के लिये अनुकरणीय हो सकती थी पर वो बेचारे खुद को रसूल-अल्लाह बनने से न बचा पाये। उनकी यही ख़्वाहिश पिछले डेढ़ हजार वर्षों को बहुत भारी पड़ी है। पर इतना तो शायद उन्होंने सोचा भी न होगा जितना उनके चेलों ने कर दिखाया। सत्ता की हवस ने उन्हें कितनी हद तक गिरा दिया, ये इतिहास के रक्तरंजित पन्ने बखूबी बता देते हैं। उनकी शर्त कल भी वही थी और आज भी वही है। किताब (कुरान) से मानो तो ठीक वरना तलवार से मनवायेंगे। उनकी बात मान लो तो ठीक वरना भूतवाणियों से भविष्यवाणियाँ करवायेंगे।

आर्यजगत् के विख्यात लेखक पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय ने इस लेख में उनकी भविष्यवाणियों की जरा बखिया उधेड़ दी है। पाठक, आनन्द लें और सतर्क रहें। सम्पादक

बशारत के धात्वर्थ हैं शुभ सन्देश। पैग़म्बरी के प्रसंग में बशारत के पारिभाषिक अर्थ यह हैं कि किसी 'नबी' के पैदा होने से बहुत दिनों पूर्व धार्मिक ग्रन्थों में यह भविष्यवाणी कर दी गई थी कि अमुक नबी भविष्यकाल में आयेगा और लोगों का पथ-प्रदर्शन करेगा। जब कोई नबी आता है और पैग़म्बरी का दावा करता है तो इस दावे की पुष्टि में यह भी कहा जाता है कि इसके आगमन की भविष्यवाणी तो बहुत दिनों पहले कर दी गई थी और चूँकि उसका आगमन उसी भविष्यवाणी के अनुसार है इसलिए किसी को उसके मानने में ननुनच नहीं करनी चाहिये।

हमारे इस कथन की पुष्टि तथा व्याख्या मासिक पत्र 'कान्ति' के १९६२ ई. (अक्टूबर मास) के हाल के अंक के एक उदाहरण से होती है। 'कान्ति' एक हिन्दी पत्रिका है जो इस्लाम धर्म के प्रचार के उद्देश्य से 'जमाअत-इस्लामी-हिन्द' नामी संस्था की ओर से रामपुर से निकलता है। विश्वनायक (अर्थात् जगद्‌गुरु) के शीर्षक से 'कौसर यज़दानी' महोदय इस लेख में लिखते हैं-

'यह वही मुहम्मद थे जिनके बारे में महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्य नन्द के कान में निम्न बात उस समय कही जबकि उनकी आखिरी साँसें चल रही थीं और उनका निष्ठावान् शिष्य उनके पाँवों को अपनी अश्रुधारा से यह कहकर पखार रहा था कि-

''स्वामी! आपके जाने के बाद संसारवालों को कौन शिक्षा देगा?''

''नन्द! महात्मा बुद्ध ने उत्तर दिया, ''मैं प्रथम बुद्ध नहीं हूँ जो पृथ्वी पर आया, न मैं अन्तिम बुद्ध हूँ। अपने समय पर एक बुद्ध और आयेगा-जो अमर सत्य मैं बताता रहा हूँ, वह भी वही बतायेगा, मेरी तरह वह भी एक पूर्ण जीवन-व्यवस्था का प्रचार करेगा।''

हम उसको कैसे पहचानेंगे?'' नन्द ने पूछा।

''वह 'मित्तरिया'[१] के नाम से प्रसिद्ध होगा।'' स्वामी ने कहा (लीडर १६ अक्टूबर १९३०)

ऐसे ही मूसा ने इस बच्चे के आने की सूचना इस तरह दी थी- ''खुदा सीना से निकला, सईर से चमका और फ़ारान ही के पर्वतों से प्रकट हुआ दस हज़ार 'कुदसियों' के साथ।''

यह वही पैगम्बर थे जिनके आने की हज़रत दाऊद, सुलेमान और नबी यसाअयाह ने खुशख़बरी दी थी। नबी हबकूक, अलयसअ आदि ने भी उनके आगमन की सूचना दी थी।

यह वही रसूल थे जिनके आने की सूचना फाँसी के तख़्ते पर लटकते समय हज़रत ईसा ने अपने साथियों को इन शब्दों में दी थी।

''मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें करनी हैं पर अब तुम उसे सहन नहीं कर सकते। जब वह पुण्यात्मा आयेगा तो तुम-को तमाम सच्चाई की राहें दिखायेगा, इसलिये वह अपनी ओर से कुछ न कहेगा, जो कुछ अल्लाह की ओर से सुनेगा, वही कहेगा और तुम्हें आगे की बातें बतायेगा।

(यूहना अध्याय १६ आयत १३-१४)।

इस पूरे लेख से आपको यह ज्ञात हो जायेगा कि मुसलमान विद्वानों की दृष्टि में 'बशारत' या 'भविष्य-वाणी' का क्या अर्थ है? और हज़रत मुहम्मद साहब के शुभागमन की भविष्यवाणी किन शब्दों में की गई है या दूसरे शब्दों में यह कहना चाहिये कि किस प्रकार के कथनों को मुसलमान विद्वानों ने मुहम्मद साहब की बशारत समझा हुआ है।

जब कोई किसी के सामने कोई 'भविष्य-वाणी' करता है तो उसका प्रयोजन यही होता है कि तुमको आजकल जो कष्ट हो रहे हैं उनको दूर करने के लिये अमुक साधन भविष्य में उपस्थित होंगे। कल्पना कीजिये कि मैं बीमार हूँ। चिकित्सा की कोई सम्भावना नहीं है। आप मुझे ढारस दिखाने के लिये एक भविष्यवाणी करते हैं कि ''घबराओ मत कल अमुक डॉक्टर आयेगा और तुम्हारी समुचित चिकित्सा करेगा।'' तो यह सुनकर मुझे अवश्य सान्त्वना होगी और मैं उस डॉक्टर के आने की प्रतीक्षा करूँगा, परन्तु यदि मेरे जीवन में कोई डॉक्टर न आवे और मैं मर जाऊँ और तीन-चार सौ वर्ष पीछे मेरे परिवार में कोई डॉक्टर उत्पन्न हो जाये और वह दावा करे कि मेरे आने का शुभ-सन्देश तो इतने वर्ष पहले अमुक पुरुष को दिया जा चुका था, तो कौन ऐसा बुद्धिमान् पुरुष है जो ऐसी भविष्यवाणी को ठीक समझ ले और ऐसी भविष्यवाणी से वक्ता या श्रोता को क्या लाभ हो सकता है? अब आइये, ऊपर की भविष्यवाणियों की जाँच करें।

महात्मा बुद्ध हज़रत मुहम्मद साहब से हज़ार ग्यारह सौ साल पूर्व हुए। अरब से बहुत दूर देश भारत में। जब वह मृत्यु के निकट थे तो उनका भक्त शिष्य स्वभावत: शोकातुर और दु:खी था। उसका आचार्य और पथ-प्रदर्शक उससे अलग हो रहा था। उस समय उसके वियोगज दु:ख को दूर करने के लिये महात्मा बुद्ध ने कहा होगा कि संसार में सैकड़ों गुरु उत्पन्न हुए और होंगे। तुम क्यों दु:खी होते हो? यह संसार तो इसी प्रकार चलता रहता है। इसका हज़रत मुहम्मद साहब से तो किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। गुरु का नाम 'मैत्रेय' दिया हुआ है जो नन्द (शिष्य) का दिया हुआ है। बुद्ध के इस कथन का केवल नन्द ही साक्षी है। यह वार्तालाप केवल दो मनुष्यों में हुआ था- बुद्ध में और नन्द में। बुद्ध की मृत्यु की बात नन्द ने कही होगी। 'मैत्रेय' का अर्थ है जगत् का हितैषी। सभी आचार्य संसार के मित्र होते हैं। शायद इस लेख के लेखक से पहले किसी मुसलमान विद्वान् ने हज़रत मुहम्मद साहब की बशारत में महात्मा बुद्ध की इस बातचीत का प्रमाण नहीं दिया और शायद 'लीडर' पत्र में एक लेख देखकर कौसर महोदय का जी ललचाया कि इसको बशारत में शामिल कर दो।

महात्मा बुद्ध के पीछे पूर्वी और पश्चिमी देशों में बहुत से नेता उत्पन्न हुए। भारतवर्ष में शंकर, रामानुज, कबीर, नानक इत्यादि। पश्चिमी देशों में हज़रत ईसा आदि। महात्मा बुद्ध के कथन में कोई शब्द ऐसा नहीं है जिससे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संकेत से भी यह प्रकट हो सके कि यह भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद के सम्बन्ध में है और हज़रत मुहम्मद या उसके सहयोगियों में से किसी ने इस बशारत का कोई वर्णन नहीं किया। यदि आज न्यायालय में दो मनुष्य खड़े हो जायें और एक कहे कि महात्मा बुद्ध का आशय गुरुनानक से है और दूसरा कहे कि हजरत मुहम्मद साहब से, तो निर्णय किन शब्दों के आधार पर होगा? हमारे जीवन में ही एक अवसर आ चुका है। थियोसोफिकल सोसायटी के कुछ नेताओं की ओर से यह दावा किया गया था कि महात्मा बुद्ध की भविष्यवाणी के अनुसार महात्मा मैत्रेय श्री जे. कृष्णमूर्ति के शरीर में प्रकट होंगे। बहुत दिनों तक इसकी चर्चा रही। किंवदन्तियाँ भी चलती रहीं। यह युग भी वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा बदल चुका था। मिथ्या मान्यताओं और अन्धविश्वासों का जोर कुछ कम हो गया था। अत: यद्यपि श्री जे. कृष्णमूर्ति अपने विचारों का प्रचार करते रहे, परन्तु महात्मा मैत्रेय के रूप में नहीं, अपितु अपने वैयक्तिक रूप में। कोई भी सम्प्रदाय अपने प्रवर्तक या आचार्य को मैत्रेय का अवतार मान सकता है।

अब रही हज़रत ईसा की भविष्यवाणी, इसमें भी एक भी शब्द नहीं जिससे कहा जा सके कि यह भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद के सम्बन्ध में है। दाऊद, सुलेमान आदि की भविष्यवाणियाँ भी इसी प्रकार की हैं।

केवल कुछ मनमोहक शब्द कह दिये गये, इनको आप आशीर्वाद कहें या सहानुभूति। ऐसी भविष्यवाणियाँ तो प्रतिदिन हुआ करती हैं। इनका दावेदार कोई कहीं हो सकता है? न काल का निर्देश न देश का, न घटनाओं का! कौन सा युग है जिसमें दुराचार, लुचपन या अत्याचार, न्यूनाधिक नहीं हुए? और कौन सा युग है जब उनमें संरक्षण के लिये नेता उत्पन्न नहीं हुए? मुहम्मद साहब और महात्मा बुद्ध की जीवन-घटनाओं में कौन सा सादृश्य है या उनके सिद्धान्तों और मन्तव्यों में कौनसी एकता है जिसके आधार पर कहा जा सके कि महात्मा बुद्ध ने हज़रत मुहम्मद साहेब के शुभागमन का समाचार इतनी शताब्दियों पूर्व दिया था।

हम यह बात तो स्वीकार करते हैं कि अनपढ़ लोगों में भविष्यवाणियों के विषय में एक मिथ्या विश्वास चला आता है। भारतवर्ष में ज्योतिषी लोग रोज़ भविष्यवाणियाँ किया करते हैं, कोई हाथ की रेखाओं को देखकर आगे की बात बताते हैं। कोई ग्रहों की चाल से भविष्यवाणी करता है। ये भविष्यवाणियाँ शुभ-सन्देश भी होती हैं और अशुभ भी। आश्चर्य तो यह है कि धार्मिक भवनों की नींव ऐसे मिथ्या विश्वास पर रख ली जाती है, और बड़े-बड़े विद्वान् भी चक्कर में आ जाते हैं तथा दुनिया को चक्कर में डाल देते हैं। हज़रत ईसा के विषय में भी ईसाई पादरियों ने यहूदियों की धर्मपुस्तकों से निकाल-निकालकर इस प्रकार की बशारतें पेश की हैं। जिनको यहूदी नहीं मानते, परन्तु ईसाई मानते चले आ रहे हैं। हम यहाँ बाइबिल से कुछ नमूने पेश करते हैं-

मती की इंजील अध्याय १ आयत २२,२३ में है-

''यह सबकुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा था पूरा हो।'' (२२)

''कि देखो एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रक्खा जायगा जिसका अर्थ यह है 'परमेश्वर हमारे साथ'।'' (२३)

ईसाई विद्वान् कहते हैं कि इस आयत में 'पुराना नियम' के 'यशयाह' अध्याय ७ आयत १०-१४ का हवाला है। वे आयतें ये हैं- ''फिर यहोबा ने आहाज़ से कहा'' (१०)। ''अपने परमेश्वर यहोवा से कोई चिह्न माँग, चाहे वह गहरे स्थान का हो या ऊपर आसमान का हो'' (११)। ''आहाज़ ने कहा, मैं नहीं माँगने का' और मैं यहोबा की परीक्षा नहीं करूँगा।'' (१२) ''तब उसने कहा- हे दाऊद के घराने सुनो! क्या तुम मनुष्यों को उकता देना छोटी बात समझकर मेरे परमेश्वर को भी उकता दोगे? (१३) इस कारण प्रभु आप ही तुमको एक चिह्न देगा। सुनो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रक्खेगी।'' (१४)

यह भविष्यवाणी कब की गई उसी किताब में देखिये-

'यहूदा का राजा आहाज़ जो योताम का पुत्र और उज्जियाह का पोता था, उसके दिनों में आराम करके राजा रसीन और इस्राईल के राजा रमल्याह के पुत्र पेकह ने येरूशलेम से लड़ने के लिये चढ़ाई की, परन्तु युद्ध करके उनसे कुछ बन न पड़ा।'' (१)

जब दाऊद घराने को यह समाचार मिला कि अरामियों ने एप्रैमियों से सन्धि की है तो वह और उसकी प्रजा ऐसी काँप उठी, जैसे वन के वृक्ष वायु चलने से काँप जाते हैं। (२) (यशयाह अध्याय ७ आयत १-२)। तब यहोवा ने यशयाह को आज्ञा दी कि आहाज़ से मिल और उसको विश्वास दिला। अत: यशायाह आहाज़ के पास जाता है और आहाज़ को ढारस बँधाता है कि शत्रु सफल न हो सकेंगे। हज़रत ईसा के आगमन की बशारत (भविष्यवाणी) का इसी घटना से सम्बन्ध है।

अब तनिक सोचिये। यह आह्लादजन्य और सान्त्वना की बात कब कही गई? हज़रत ईसा के आगमन के ७४२ वर्ष अर्थात् लगभग तीस पीढ़ियों पहले। आहाज़ को इससे क्या लाभ हुआ? और इसका क्या प्रमाण है कि यहाँ संकेत कुँआरी मरियम के गर्भवती होने और ईसामसीह की उत्पत्ति के विषय में है और न यह सम्भव है कि ईसामसीह के शुभागमन ने आहाज़ या उसके सहयोगियों को कोई लाभ पहुँचाया हो? हाँ, इतना अवश्य है कि ईसाई पादरियों ने बेबात का बतंगड़ बना लिया। 'प्रेरितों के कामों का वर्णन' अध्याय १ की १५ से २० तक की आयतें देखिये- ''और उन्हीं दिनों में पतरस भाइयों के बीच में जो एक सौ बीस के लगभग इकट्ठे थे खड़ा होकर कहने लगा (१५) हे भाइयो! अवश्य था कि पवित्र

शास्त्र का वह लेख पूरा हो जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहूदा के विषय में जो यीशु के पकड़नेवालों में अगुआ था, पहले से कही थी (१६), क्योंकि वह तो हममें गिना गया और इससे इस सेवा में सहभागी हुआ (१७)। उसने अधर्म की कमाई में एक खेत मोल लिया और सिर के बल गिरा और उसका पेट फट गया और उसकी सब अन्तड़ियाँ निकल पड़ीं। (१८) और इस बात को येरूशलम के सब रहनेवाले जान गये। यहाँ तक कि उस खेत का नाम उनकी भाषा में हुकल दमा अर्थात् लहू का खेत पड़ गया, (१९) क्योंकि भजन संहिता में लिखा है कि ''उसका घर उजड़ जाये और उसमें कोई न बसे और उसका पद कोई दूसरा ले ले।'' (२०)

यह है पादरी पतरस का एक लैक्चर जो हज़रत ईसा के समय के बहुत पीछे दिया गया था और जिसका उद्देश्य यह था कि सुननेवाले लोग एक पुरानी गप्प कहानी से प्रभावित होकर ईसाई धर्म में पक्के हो जायें। पतरस को यह क्या पड़ी थी कि वास्तविक घटना की जाँच करते? वह तो थे केवल वक्ता या धर्म-प्रचारक! उनको ऐतिहासिक या प्राकृतिक घटनाओं के अनुसन्धान से क्या प्रयोजन? भजन संहिता (दाऊद के जुबूर) के जिस गीत का ऊपर के लैक्चर में प्रमाण दिया गया है वह तो बिल्कुल कुरान की सूरत अबूलहब से मिलता-जुलता है। उसमें एक कोसा (शाप) है जो बहुधा लोग बुरे लोगों के लिये कोसते समय दिया करते हैं। उसमें ऐतिहासिक घटना का कोई उल्लेख नहीं है । यह बद्दुआ तो मुहम्मद साहब के किसी शत्रु पर भी लागू हो सकती है। पतरस ने यह भी नहीं सोचा कि दाऊद के जिस गीत का प्रमाण दिया जा रहा है उसमें यीशुमसीह के साथी का कोई वर्णन नहीं है। ईसाई पादरियों का कहना है कि यहाँ जुबूर (भजन संहिता) के अध्याय ४१ की ९ वीं आयत अभिप्रेत है, परन्तु वहाँ तो दाऊद अपने शत्रु की शिकायत कर रहा है। ''प्रत्युत मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था। जो मेरी रोटी खाता था उसने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है।।'' उसमें ईसा के चेले यहूदा का कहाँ वर्णन है जिसने ईसा को पकड़वाया था?

एक और भविष्यवाणी देखिये- ''मैं उसको देखूँगा तो सही, परन्तु अभी नहीं। वह मुझे दिखाई भी देगा, परन्तु निकट से नहीं। याकूब में से एक तारा उदय होगा और इस्राईल में से एक राजदण्ड उठेगा। जो मोआब के अलंगों को चूर-चूर कर देगा।'' (गिनती २४-१७)

यहाँ सितारा से अभिप्राय ईसामसीह से लिया जाता है। यह भविष्यवाणी थी। किसने की और कब की? और किसको शान्ति देने के लिये की? इसका उत्तर स्वयं बाइबिल से सुनिये 'गिनती' के २२वें अध्याय में दिया है कि बिलाम एक सगुन देखनेवाला था जो पतोर नगर में रहता था। यह भविष्यवाणी उसी ने की थी! कब की थी? ईसामसीह के जन्म से १४५२ वर्ष पहले ''तब इस्राइलियों ने कूच करके परीहो के पास यरदन नदी के इस पार मोआब के मैदानों में डेरे खड़े किये।'' (गिनती २२-१)

मोआब के लोग डर गये कि ''अब यह दल हमारे चारों ओर के सब लोगों को ऐसे चट कर जायेगा जिस तरह बैल खेत की हरी घास को चट कर जाते हैं।'' (गिनती २२-४)

इस प्रकार भयभीत होकर 'मोआब' के राजा बालाक ने जो सिप्पोर का पुत्र था, बलाम के पास आदमी भेजे कि बलाम ईश्वर से उनकी सहायता के लिये प्रार्थना करे, क्योंकि बालाक को विश्वास था कि जिसको ''तू आशीर्वाद देता है वह धन्य होता है और जिसको तू श्राप देता है वह श्रापित हो जाता है (गिनती २२-७)। इस पर बलाम ने ईश्वर से प्रार्थना की और यह भविष्यवाणी उसी का परिणाम है। जिनका जी चाहे सब अध्यायों का अवलोकन करें। सान्त्वना देनी थी बालाक को जो बेचारा इस्राईल की चढ़ाई से भयभीत हो रहा था। बलाम ने भविष्यवाणी कर दी कि लगभग पन्द्रह शताब्दियों पीछे ईश्वर हज़रत ईसा को भेजेगा। ''जब तक इराक से तिर्याक आयेगा साँप का काटा मर जायेगा[१]।'' यह चिकित्सा है या उपहास। भविष्यवाणी है या अलिफ़लैला की कहानी?

एक तीसरी भविष्यवाणी सुनिये- ''हे बैतलेहम एप्राता यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूवा के हजारों में गिना जाता तो भी तुझमें से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा जो ऐस्राएलियों में प्रभुता करनेवाला होगा और उसका निकलना प्राचीनकाल से वरन् अनादिकाल से होता आया है। (मीका ५-२)

यह भी हज़रत ईसा के आने की खुशख़बरी (बशारत

या भविष्यवाणी) है। कब हुई? ईसा से ७१० वर्ष पूर्व। इसके अतिरिक्त यह एक स्वप्न था जो मीका नबी ने देखा था।

एक और बशारत का नमूना देखिये- ''जब ऐस्राइल बालक था तब मैंने उससे प्रेम किया और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।'' (होशे अध्याय ११ आयत १)

यह घटना ईसा से ७२५ वर्ष पूर्व की है। मती की इंजील के दूसरे अध्याय की पहली आयत में इसी बशारत की ओर इशारा है कि होशे में जो भविष्यवाणी की गई थी वह पूरी हुई, क्योंकि ईशा मिस्र से बुला लिए गये। मती और होशे के वर्णनों को मिलाकर पढ़िये। अद्‌भुत पहेली मालूम होगी। कोई कहीं कुछ ऊटपटाँग बात कह देता है और उसके सैकड़ों वर्ष पीछे कोई उसकी मनमानी व्याख्या कर बैठता है।

हम यहाँ केवल एक और बशारत का उल्लेख करते हैं- ''यहोवा यह भी कहता है- सुन, रामानगर में विलाप और बिलक -बिलककर रोने का शब्द सुनने में आता है। राहेल अपने लड़कों के लिये रो रही है और अपने लड़कों के कारण शान्त नहीं होती, क्योंकि वे जाते रहे। (यिर्मयाह अध्याय ३१ आयत १५)

''यहोवा यों कहता है। रोने-पीटने और आँसू बहाने से रुक जा'', क्योंकि तेरे परिश्रम का फल निकलनेवाला है। यहोवा कहता है और वे शत्रुओं के देश से लौट आयेंगे।

अन्त में तेरी आशा पूरी होगी। यहोवा की यह वाणी है। तेरे वंश के लोग अपने देश में लौट आएंगे।' (यिर्मयाह अध्याय ३१। आयत १६,१७)

मती अध्याय २, आयत १७ व १८ में यिर्मयाह के इस कथन को भी ईसामसीह के आगमन से सम्बद्ध किया गया है- ''तब जो वचन यिर्मयाह भविष्य-वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ।''

रामाह में एक करुण-नाद सुनाई दिया। रोना और बड़ा विलाप। राहेल अपने बालकों के लिये रो रही थी और शान्त होना न चाहती थी, क्योंकि वे हैं नहीं।' (मती २।१७,१८)

'पुराने नियम' (Old Testament) के अनुसार यह घटना ईसामसीह से ६०६ वर्ष पूर्व की है और यह भविष्यवाणी नहीं अपितु उस समय की एक घटना का वर्णन है, परन्तु मती महोदय के लिए यह भी ईसा के आगमन की एक 'बशारत' बन गई।

इन बशारतों में एक मेरी ओर से मिलाइये। फ़ारसी कवि हाफ़िज़ का एक पद है-

रसीद मुयदा कि अय्यामे ग़म न ख़्वाहद मांद।
चुनी नमाँद चुनाँ नीज़ हम न ख़्वाहद मांद।
संदेश मिला है कि दुःख के दिन न रहेंगे।
यह नहीं रहा तो यह भी नहीं रहेगा।।

यह एक बशारत है। किसके लिये? ब्रह्मदेश ४ जनवरी १९४८ को अंग्रेजों के पंजे से मुक्त हुआ। क्या ऊपर लिखी बशारतों के समान किसी ब्रह्मदेश के निवासी को यह कहने का अधिकार प्राप्त नहीं है कि हाफिज़ ने यह भविष्यवाणी इसी आज़ादी के विषय में की थी?

एक यह भविष्यवाणी ऐसी बशारतों (भविष्यवाणियों) को पढ़ते हुए मुझे अपने बालकपन की एक बात याद आ जाती है। उस समय विक्टोरिया भारतवर्ष की महारानी थीं। वह थीं अंग्रेज़ और ईसाई। उस समय गाँववाले कहा करते थे कि जब रावण का बेटा मेघनाद मारा गया और उसकी पत्नी सुलोचना अपने पति का शव माँगने के लिये रामचन्द्र के पास आई तो उसके विलाप को सुनकर रामचन्द्र जी का दिल पिघल गया और उन्होंने यह वरदान दिया कि तेरी जाति में से एक स्त्री पैदा होगी जो भारतवर्ष पर राज करेगी। विक्टोरिया वही महारानी है। जिसके विषय में प्राचीनकाल में भविष्यवाणी की गई थी। रामचन्द्र जी की बात पूरी हुई।

सत्य का पलायन- यह थी गाँववालों की गप्प। किसी विद्वान् ने चाहे वह भारतीय हो या अंग्रेज़ इस गप्प की ओर ध्यान नहीं दिया, परन्तु ऐसी ही कहानियों को ईसाइयों ने हज़रत ईसा के लिये और मुसलमानों ने हज़रत मुहम्मद साहब के लिये बशारत (भविष्यवाणी) मान रखा है। जब तक ये कहानियाँ केवल साधारण जनता तक ही सीमित रहती हैं उस समय तक ये उनके मनोविनोद का साधन रहती हैं और इनसे लोगों का जी बहलता है, परन्तु जब इनको महत्त्व और बढ़ावा दे दिया जाता है और इनका प्रवेश धर्मग्रन्थों में हो जाता है तो पवित्र ग्रन्थों की पवित्रता में बट्‌टा लग जाता है और जिन विशाल व्यक्तियों

से इनका सम्बन्ध जोड़ा जाता है उनकी मौलिक महत्ता भ्रान्त विचारों के पर्दे के पीछे छिप जाती हैं। सम्भवतः साम्प्रदायिक प्रचारकों को कुछ सफलता मिल जाय, परन्तु धर्म का वास्तविक प्रयोजन तो निष्फल हो जाता है। कुरान में कहा है कि 'सच्च आया और झूठ भागा।' परन्तु होता है इसका उलटा। 'झूठ आता है और सत्य भाग जाता है।' हज़रत मुहम्मद साहब के गौरव को प्रकट करने के लिये बहुत से विशाल पराक्रम हैं। इनसे उनकी महत्ता सिद्ध होती है। बशारत की कल्पित गप्पों और बनावटी कहानियों को गढ़ने और मानने की क्या आवश्यकता है? कस्तूरी वह है जो स्वयं सुगन्ध दे, न कि अत्तार के कहने की ज़रूरत पड़े। 'कान्ति' पत्रिका के सम्पादक महोदय ने महात्मा बुद्ध के अन्तिम वचनों को मुहम्मद साहब की बशारत बताया है। शायद वे समझते होंगे कि महात्मा बुद्ध के इस वचन को सुनकर हिन्दू लोग इस्लाम की ओर झुक जायेंगे। हमारे मत में तो यह सीधा मार्ग नहीं है।

भविष्यवाणियाँ या गप्पों की स्वादिष्ट चटनी

पाठकवृन्द! सदा स्मरण रखिये कि भविष्यवाणियाँ गप्पबाज़ी की एक रंगीन (ब्वसवनतनिस) शैली है। आप इन्हें गप्पों की एक स्वादिष्ट चटनी कह सकते हैं। ऐसा प्रथम बार ही नहीं हुआ कि मुसलमानों ने वेद आदि प्राचीन ग्रन्थों से मुहम्मद साहब के आगमन की भविष्यवाणियाँ खोज निकाली हैं। पहले भी ऐसे कई विफल प्रयास किये गये। वेद में श्रद्धा रखनेवालों को हम बताना चाहते हैं कि इस्लाम को कई प्रकार के अन्धविश्वासों से छुड़ाने का यत्न करनेवाले डॉ. गुलाम जेलानी ने भी संस्कृत साहित्य से-हिन्दुओं के ग्रन्थों से पैग़म्बर मुहम्मद के अवतार लेने की भविष्यवाणियों का उल्लेख एक पुस्तक में किया है।

ये सब किसलिये? हिन्दुओं को भ्रमित करने के लिये। हिन्दुओं के अन्धविश्वास का लाभ उठाकर इस्लाम की सेवा करने के लिये। ज्ञान घोटाला में पृष्ठ १६ पर दी गई ''खुदा सीना से.....'' निकला की भविष्यवाणी को मदीना बुक डिपो से छपे कुरान का भाष्यकार 'गोलमोल शब्दों की भविष्यवाणी' लिखता है। सब भविष्यवाणियाँ गोलमोल ही होती हैं। मुसलमानों में आज तक कितने महदी इन्हीं भविष्यवाणियों के कारण निकल चुके हैं। सबको मुसलमानों ने काफ़िर घोषित किया है। यही नियम वेदमन्त्रों का दुरुपयोग करनेवालों पर लागू होना चाहिये। अन्यथा कुरान की कलम की सूरत (पं. लेखराम), कमर (चाँद) की पं. रामचन्द्र देहलवी, उलनूर (प्रकाश) की सूरतें पं. शान्तिप्रकाश, पं. देवप्रकाश के आगमन की भविष्यवाणी क्यों न मानी जायें?

हिन्दुओ! इस पीलिये के रोग का निवारण करो!

हिन्दू समाज को भी आये दिन के इन षड्यन्त्रों व कुचालों का भाण्डा फोड़ने के लिये जागरूक होकर कुछ करना पड़ेगा। दक्षिण भारत (हैदराबाद) से कभी एक मियाँ उठा। उसने माता कौशल्या, सीता, श्रीराम व कृष्ण का, वेदशास्त्र का अपमान करते हुए, गोहत्या के पाप को माता सीता व श्रीकृष्ण पर थोपते हुए स्वयं को लिंगायतों के महापुरुष चन्न बस्वेश्वर का अवतार बताया। वह ढोंगी भी ऐसी-ऐसी भविष्यवाणियों का गीदड़ ठप्पा लिये घूमता-फिरता रहा।

हिन्दुओं के धर्मग्रन्थों में से इन्हें गौतम, कपिल, कणाद आदि ऋषियों के विषय में तो कोई भविष्यवाणी न मिली। विश्व को अनूठी योगविद्या देने वाले पतञ्जलि ऋषि के बारे में तो कुछ न मिला। गुरु अर्जुनदेव, गुरु तेगबहादुर, भाई मतिदास आदि विभूतियों के बारे में तो कोई भविष्यवाणी न मिली-राममन्दिर का इतना बड़ा आन्दोलन चला उसके बारे में तो कुछ न मिला। वेद की सार्वभौमिक कल्याणकारी शिक्षाओं पर तो इन्होंने कभी मुँह नहीं खोला। निब घिसाने का शौक जब जी में आता है वेद से, पुराणों से व अन्य प्राचीन ग्रन्थों से सभी नबी निकाल देते हैं। ऐसा क्यों? कहते हैं पीलिये के रोगी को सबकुछ पीला ही पीला दिखाई देता है। हिन्दुओ! आपको पीलिये के रोग का निवारण करना होगा।

टिप्पणी- १. मित्तरिया का अर्थ है 'वह जिसका नाम करुणा है' अर्थात् 'रहमत'।

२. फारसी भाषा की लोकोक्ति है. ता तर्याक अज़ अराक आवुर्दा शवद मार गज़ाद मुर्दा बवद। यह कथन इसी लोकोक्ति का अनुवाद है। तर्याक नाम की औषधि सर्प के काटने पर दी जाती थी।

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज का स्वतन्त्रता-संग्राम में योगदान

डॉ. बलवीर आचार्य

पिछले अंक का शेष भाग....

प्रमुख विद्वान लेखकों की साक्षियाँ

१) महर्षि जी के सेवक चौ. नानकचन्द के शिष्य सौरम के इमदान खाँ की सन् १८८८ ई. में लिखी कविता के ८ पद्यों में से दो इस प्रकार हैं-

दिल में शोले उठते हैं देव दयानन्द की याद के,
पन्ने पलट कर देख लो उनकी जिन्दगी की दाद के।
१८५७ की आजादी की जंग में सब कुछ ही किया, मगर देश के कपूतों ने दगा करके हरवा दिया।।

२) महर्षि दयानन्द के कई बार दर्शक, उपदेशश्रोता सूफ़ी इमामबख्श ने लम्बे लेख के प्रमाण में १८५७ में अंग्रेजी अत्याचारों के विवरण में लिखा है, ''कुछ साधु सन्तों का ऐसा भी कहना था के स्वामी दयानन्द जी गदर के क्रान्तिकारियों के साथ रहे थे।'' कृपया पढ़ें 'सर्वहितकारी रोहतक' २१.०१.८१ और ०७.०८.८५ के लेख।

३) पं. जयचन्द्र विद्यालङ्कार लिखते हैं कि बनारस के उदासी मठ के शास्त्री सत्यस्वरूप (लिखते हैं) का कथन है कि -''साधु सम्प्रदाय में तो बराबर यह अनुश्रुति चली आती है कि दयानन्द ने सन् १८५७ के संघर्ष में महत्त्वपूर्ण भाग लिया था।''

(राष्ट्रीय इतिहास का अनुशीलन)

४) श्री पृथ्वीसिंह मेहता जी लिखते हैं- ''यह बात तो स्पष्ट हो ही सकती है कि क्रान्ति की तैयारियों आदि से उससे (दयानन्द) निकट परिचय करने का अवसर मिला। यह मान लेना आसान नहीं कि दयानन्द सदृश भावनाप्रवण और चेतनावान हृदय, मस्तिष्क का युवक उसके प्रभाव से अछूता बचा रहा हो।''

(हमारा राजस्थान, जागृति के अग्रदूत दयानन्द पृ. २६५)

५) यशस्वी विद्वान् आर्यनेता पं. जगदेवसिंह सिद्धान्ती ने सितम्बर १९७८ ई. को मुझे यह बताया था कि ''1963-64 में हलका मेहसाना के सांसद श्री मानसिंह के साथ मैं टंकारा और पोरबन्दर गया था। पोरबन्दर के लोगों ने तब बताया कि स्वामी दयानन्द की एक चिट्ठी 1857 में नाना साहब (स्वामी दिव्यानन्द) की रक्षार्थ पोरबन्दर में सेठ के नाम आई थी। मानसिंह ने यह भी बताया था कि सिद्धपुर सौराष्ट्र के राजा ने हरयाणा से हजारों ब्राह्मण घर बुलाकर महर्षि दयानन्द के पूर्वजों सहित अपने राज्य में बसाये थे।''

(कथन, सम्राट प्रेस पहाड़ी धीरज दिल्ली)

६) पं. श्रीकृष्ण शर्मा आर्योपदेशक राजकोट लिखते हैं कि ''सन् १८५७ से पूर्व भारतीय क्रान्ति के एक सूत्रधार स्व. श्री नानासाहब पेशवा ने बिठूर में महर्षि से सम्पर्क साधा था और स्वतन्त्रता-संग्राम में विजयी बनने के लिये मार्गदर्शन भी माँगा था, पर महर्षि की सलाह के अनुसार कार्यारम्भ करने से पूर्व ही मेरठ और दिल्ली में सशस्त्र क्रान्ति की ज्वाला भड़क उठी थी। क्रान्ति के पश्चात नानासाहब पुन: महर्षि को मिले थे। सौराष्ट्र में ही उनके गुप्तावास के लिये महर्षि ने प्रबन्ध कर दिया था। (एक पत्र से)... वे साधु थे श्री नानासाहब पेशवा और वह पत्र था महर्षि दयानन्द का। ...अंग्रेजी पत्रों में स्पष्ट उल्लेख है कि छप्पनियाँ के दुष्काल में महर्षि दयानन्द का मार्गदर्शन न मिला होता तो लाखों मानव अपनी जान गवाँ बैठते।''

(महर्षि दयानन्द सरस्वती का वंश परिचय पृ. ३१-३२)

७) पं. सत्यकेतु विद्यालंकार जी इंग्लैण्ड से १९५७ की क्रान्ति में सक्रिय भाग लेनेवाले कुछ साधु-फकीरों के नाम भी खोज कर लाये थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि ऋषि ने क्रान्ति में भाग ही नहीं लिया बल्कि नेतृत्व भी किया। फ्रांसीसी लेखक फोनटोम ने फ्रेंच भाषा के अपने उपन्यास 'मरयम' में कहा कि १८५७ में पकड़े गए विद्रोही बाबा सोताराम ने बताया कि क्रान्ति का संचालक दशनामी और दयाल जी साधु हैं। एक गोल मुखवाले साधु द्वारा कई साधुओं सहित मेरठ की छावनी में प्रचार और गुप्त बैठक का प्रसंग है। आपको बता दें कि ऊपर हमने ऋषि दयानन्द के क्रान्ति के वर्षों में बदले हुए नाम मूलशंकरा,

रेवानन्द, दलालजी और गोल मुखवाला साधु आदि थे।

इनके अतिरिक्त श्री पं. क्षितीश वेदलंकार, श्री जगन्नाथ विद्यालंकार आर्यमित्र में, डॉ. रामेश्वर दयाल गुप्त सर्वहितकारी १४ फरवरी, १९८५ में, वैद्य रामशंकर गुप्त 'मधुरलोक' जनवरी ८५ में, बनारसीसिंह जी आदि अनेकों विद्वान् अपने-अपने ढंग से १८५७ संग्राम में महर्षि जी का सहयोग मानते हैं।

कृपया पाठकगण स्वामी वेदानन्द दयानन्दतीर्थ की लिखित स्वामी विरजानन्द की जीवनगाथा और स्वामी वेदानन्द वेदवागीश गुरुकुल झज्जर की पुस्तक (सुधारक विशेषांक) 'देवपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती' अवश्य पढ़ें। इनमें इस विषय के बहुत प्रमाण हैं।

इस छोटे से लेख में तो स्वामी ओमानन्द जी द्वारा संग्रहीत सर्वखाप पंचायत सौरम की ही सामग्री संकलित है, क्योंकि उनके पास तत्सम्बन्धी मूल हस्तलेख हैं।

महर्षि जी ने सक्रिय राजनैतिक विधान का उपदेश ही सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में किया है। वह वैदिक गणतन्त्रीय राजविधायक थे, जो मनुस्मृति आदि राजविधान के मर्मज्ञ महापण्डित थे और राजस्थान के कई राजाओं को राजविधान मनुस्मृति पढ़ाई थी। उन्होंने सकल वेद-विद्याओं तथा चक्रवर्ती आर्यराज्य के प्रचार-प्रसार की बात अपने ग्रन्थों और आर्याभिविनय में लिखी है। मेरा उपरोक्त लेख हरयाणा के पंचायती रिकॉर्ड और आर्यविद्वानों के आधार पर लिखा संक्षिप्त लेख है।

१८५७ व महर्षि दयानन्द सरस्वती
-निहालसिंह आर्य, अध्यापक

सर्वखाप पंचायत का प्रामाणिक दस्तावेज़

जिला मुजफ्फरनगर , उत्तरप्रदेश के ग्राम सौरम की सर्वखाप पंचायत के उर्दू में लिखे दस्तावेज़ पाये गए हैं। इस दस्तावेज़ में सन् १८५६ ई. में मथुरा के जंगल में हुई पंचायत का वर्णन मिलता है। मीर मुश्ताक मीर इलाही मीरासी का लिखा हुआ यह दस्तावेज़ इस पंचायत के अवरकालीन महामन्त्री चौधरी कबूल सिंह ने सन् १९६९ ई. में 'आर्यमर्यादा' के सम्पादक को दिया था, जो आर्यमर्यादा हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका, दिल्ली में, १२ अक्तूबर,१९६९ ई. को तथा आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, हरियाणा से सन् १९८६ ई. में प्रकाशित, 'देशभक्तों के बलिदान' नामक ग्रन्थ के पृष्ठ ५४४ से ५४९ पर हिन्दी भाषा की देवनागरी लिपि में रूपान्तर सहित छापा गया था। इसके उपर्युक्त देवनागरी रूपान्तर को डॉ. रामप्रकाश जी ने 'गुरु विरजानन्द दण्डी जीवन एवं दर्शन' नामक ग्रन्थ में पृष्ठ ५२ से ५४ पर छापा है, जो इस प्रकार है-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपालु और दयालु है)

सन् १८५६ ई. बमुताबिक (तदनुसार) सम्वत् १९१३ को एक पंचायत मथुरा के तीर्थगाह पर मुनअकद (आयोजित) हुई। उसमें हिन्दू मुसलमान और दूसरे मज़हब के लोगों ने शिरकत की थीं (भाग लिया था)। इस पंचायत में एक नाबीना (नेत्रहीन) हिन्दू दरवेश (संन्यासी) लाया गया था एक पालकी में बैठाकर। उनके आने पर सब लोगों ने उनका अदब (सत्कार) किया। जब यह एक चौकी पर बैठ गया तब हिन्दू-मुसलमान फ़कीरों ने इनकी क़दमबोसी की (चरण चुम्बन किया)। इसके बाद सब हाज़रीन (उपस्थित गण) पंचायत ने उनका अदब (सत्कार) किया। सबके अदब के बाद नाना साहब पेशवा , मौलवी अजीमुल्ला खान , रंगू बाबू और शहंशाह बहादुरशाह का शहज़ादा इन सबने इनके अदब में कुछ सोने की अशर्फियाँ पेश कीं। इसके बाद एक हिन्दू, एक मुसलमान फ़कीर ने यह कहा कि हमारे उस्ताद की जुबान-ए-मुबारक (माङ्गलिक वाणी) से जो तकरीर (भाषण) होगी , उसे तसल्ली (धैर्य) के साथ सब साहिबान (साथी) सुनें और वह मुल्क (देश) के लिये बहुत मुफ़ीद (लाभदायक) साबित (सिद्ध) होगी और यह वली अल्लाह(ईश्वरभक्त) साधु बहुत जुबानों का (भाषाओं का) आलिम (विद्वान्) और हमारा और हमारे मुल्क (देश) का बुज़ुर्ग (वयोवृद्ध) है। ख़ुदा की मेहरबानी (ईश्वर की कृपा) से ऐसे बुज़ुर्ग हमें मिले, ख़ुदा का हम पर बड़ा अहसान (उपकार) है।

दरवेश की तकरीर का आगाज़- सबसे पहले उन्होंने ख़ुदा की तारीफ़ (प्रशंसा) की और फिर उर्दू में उसका तर्जुमा(अनुवाद) किया। इस बुज़ुर्ग ने यह कहा था कि आज़ादी जन्नत (स्वर्ग) है और गुलामी दोजख़ (नरक)

है। अपने मुल्क की हुकूमत गैरमुल्की हुकूमत के मुक़ाबले में हजार दरजे बेहतर है। दूसरों की गुलामी हमेशा बेइज्जती और बेशर्मी का बायस (कारण) है। हमें किसी कौम से और किसी मुल्क से कोई नफ़रत नहीं है, हम तो ख़ल्के ख़ुदा (ईश्वर की सृष्टि) की बहबूदी (भलाई) के लिये ख़ुदा से रोज़ दुआ माँगते हैं। मगर हुकुमरान कौम (शासक वर्ग) और खासकर फिरंगी (अंग्रेज) जिस मुल्क (देश) में हुकूमत (शासन) करते हैं उस मुल्क के बाशिन्दों (निवासियों) के साथ इन्सानियत का बर्ताव नहीं करते और कितनी भी अपनी अच्छाई की तारीफ़ करें मगर उस मुल्क के बाशिन्दों के साथ मवेशियों (पशुओं) से गिरा हुआ बर्ताव करते हैं। ख़ुदा की ख़लकत (ईश्वर की सृष्टि) में सब इन्सान भाई-भाई हैं, मगर गैरमुल्की (विदेशी) हुक्मरान कौम इन्हें भाई न समझकर गुलाम समझती है। किसी भी मज़हब की किताब में ऐसा हुक्म नहीं है कि अशरफुलमख्लूकात (सारे प्राणियों में श्रेष्ठतम, मनुष्य) के साथ दग़ा की जावे और अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़वज़ी (ईश्वर के आदेश के विपरीत व्यवहार) की जावे। इस वास्ते मातहत लोगों का न कोई ईमान है न कोई उनकी शान है। फिरंगियों में बहुत-सी अच्छी भी बातें हैं, मगर सियासी मसले में आकर वह क़ौलोफ़ेल (कथन और कर्म) को न समझकर फ़ौरन (तत्काल) बदल जाते हैं और हमारी अच्छाई और नेक सलाह को फ़ौरन ठुकरा देते हैं। इसकी असल वजूहात (वास्तविक कारण) यह है कि हमारे मुल्क को वह अपना वतन नहीं समझते हैं। हमारे मुल्क का बच्चा-बच्चा उनकी ख़ैरख़्वाही (शुभेच्छा) का दम भरे, अपने वतन के कुत्ते को हमारे इन्सानों से अच्छा समझते हैं। यही सब कमी का बायस (कारण) है। इन्हें अपने ही वतन से मुहब्बत (प्यार) है। इसलिये मैं सब बाशिन्दगान-ए-हिन्द (भारतवासियों) से इल्तिजा (निवेदन) करता हूँ कि जितना वह अपने मजहब से मुहब्बत (प्यार) करते हैं ,उतना ही इस मुल्क के हर इन्सान का फर्ज़ (कर्त्तव्य) है कि वह वतनपरस्त (देश भक्त) बने और मुल्क के हर बाशिन्दे (निवासी) को भाई-भाई जैसी मुहब्बत करे। जब तुम्हारे दिलों के अन्दर वतन-परस्ती (देशभक्ति) आ जायेगी, तो मुल्क की गुलामी यहाँ से खुद-ब-खुद (स्वयं) जुदा हो जायेगी। हिन्द के रहनेवाले सब आपस में हिन्दी भाई हैं और बादशाह हमारा शहंशाह है।

तस्नीफ़ करदह (लिखनेवाला) मीर मुश्ताक मीरासी, कासिद सर्वखाप पंचायत

नोट- महात्मा संन्यासी का नाम मालूम किया, तो इनका नाम स्वामी विरजानन्द था और बहुत अरसे से मथुरा में रहते हैं और संस्कृत की तालीम (शिक्षा) देते हैं और अल्लाहताला के मौतकिद (ईश्वर विश्वासी) हैं।

सम्वत् १९१३ विक्रमी में यह पंचायत दूरदराज़ जंगल में की गई थी और शुरू भादों का माह था। यह पंचायत चार रोज (दिन) तक मुतावतर ( ) होती रही। पहले दिन आनेवाले सब मेहमानों की एक-दूसरे से मुलाकात कराई गई थी। दूसरे दिन हज़रत आदम से लेकर हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाहे सल्लाहो अलेहवसलम (हज़रत मोहम्मद ख़ुदा के दूत हैं, उन पर सतावत और उनके वंशजों पर शान्ति हो) सवानेह उमरी (जीवनी) सुनाई गई। तीसरे दिन राम, किशन और महात्मा बुद्ध और शंकराचार्य, महावीर स्वामी, अनेक ऋषि और मुनि और राजा-महाराजाओं के जिन्दगी के दास्तानों पर रोशनी डाली गई और गैर-मुल्की वतनपरस्ती और ख़ुदापरस्तों की याद दिलाई गई। चौथे दिन नाबीना संन्यासी महात्मा विरजानन्द जी और मुसलमान साईं मिया महमूदन शाह ने शुरू में विरजानन्द जी की तकरीर से पहले शुरुआत की। आज के दिन तकरीर में ख़ास-ख़ास लोगों की जमायत (सभा/बैठक) थी और ख़ुफ़िया (गुप्तचर) सरकारी आदमी इसमें नहीं था। नाबीना (प्रज्ञाचक्षु) महात्मा की तकरीर (भाषण) बहुत ही पुरजोर (प्रभावशाली) थी और हर मज़हबी इल्म (ज्ञान) से ताल्लुक (सम्बन्ध) रखती थी और डेढ़ घण्टे तक तकरीर होती रही। मैंने इनकी तकरीर के ख़ास-ख़ास अलफ़ाज (शब्द) तहरीर (लिखे) किये हैं, बाकी इन्होंने हर पहलू (विषय) पर रोशनी डाली थी। जब महात्मा विरजानन्द को पालकी में बैठाकर लाया गया उस वक्त हिन्दू-मुसलमान फ़क़ीरों ने उनकी खुशी में शंख, घडनावल, नागफणी, निगाड़ा, तुरही और नरसिंहे बजाये थे और ख़ुदापरस्ती (ईश्वर भक्ति) और वतनपरस्ती (देश भक्ति)

के गीत गाये थे। यह नाबीना साधु हर इल्म के समझने की ताकत रखता था और ख़ुदा के जलवे जलाल इसकी जुबान से ज़ाहिर (प्रकट) होता था। मैंने भी अपनी रूह के तक़ाज़े के मुताबिक पाँच फूल इनके सामने पेश किये, उनकी क़दमबोसी की और ख़ुदा से दुआ माँगी कि ख़ुदा ऐसी नेक रूहों (पवित्र आत्माओं) को खलकत की भलाई के लिये हमेशा पैदा कीजिये।

तस्नीफ़ करदह मीर मुश्ताक मिरासी

उपसंहार – उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी ने १८५७ ई. के भारतवर्ष के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था तथा १८७४ ई. में देश की स्वतन्त्रता का सर्वप्रथम मन्त्र महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही दिया था। उसी को बाद में कांग्रेस ने अपनाया। महात्मा गांधी को राष्ट्रभक्ति का पाठ भी महर्षि दयानन्द की परम्परा से ही प्राप्त हुआ था। महात्मा गांधी के गुरु गोपालकृष्ण गोखले थे। गोखले के गुरु महादेव गोविन्द रानाडे एवं महादेव गोविन्द रानाडे के प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने स्वतन्त्रता के लिए सत्याग्रह, असहयोग, सशस्त्र–क्रान्ति और आजाद हिन्द सेना में तो बढ़–चढ़कर भाग लिया ही था, इसके साथ ही आर्यसमाज के संन्यासियों ने अपने उपदेशों से, कवियों ने देशभक्ति की ओजपूर्ण कविताओं से और लेखकों ने गौरवपूर्ण भारतीय इतिहास के लेखन से आमजनता को राष्ट्र पर बलिदान के लिए प्रेरित किया था। आर्यसमाज मन्दिर क्रान्तिकारियों के शरणस्थल बने तो आर्यसमाज के गुरुकुल, पाठशालाएँ एवं स्कूल, कॉलेज नवयुवकों को देशभक्ति की प्रेरणा के केन्द्र बनकर उभरे।

आओ तोड़ें अपना मौन

धर्मेन्द्र 'जिज्ञासु'

कदम-कदम मर्यादा टूटें,
तार-तार होते विश्वास।
संयमहीन इस समाज में
बेमौसम रहे दहक पलाश।

रिश्तों की नाजुक डोरी को
कहो अब सहेजेगा कौन?
यही सोच कर मैं हूँ मौन।

रिश्तों पर लग रहा दाग है,
कहीं धुआँ है कहीं आग है।
घर की दीवारों में कालिख,
पोत रहे घर के चिराग हैं।

फिर से लाने को लालिमा
कालिमा पोंछेगा कौन?
यही सोच कर मैं हूँ मौन।

आज हर एक बेटी को डर है,
क्या सुरक्षित मेरा घर है,
गली-गली रहे घूम भेड़िए,
ना जाने किस-किस पे नजर है।

इनके हिंसक नख-दन्तों को
कहो आज तोड़ेगा कौन?
यही सोच कर मैं हूँ मौन।

जिसने देवी कहकर पूजा,
हाय उसी को ये क्या सूझा।
मुझे लूटने वाला हाय-
अपना ही है नहीं कोई दूजा।

किससे कहूँ और कैसे कहूँ,
मुझ पर विश्वास करेगा कौन?
यही सोच कर मैं हूँ मौन।

मुझे ही हिम्मत करनी होगी,
तिरछी नजर कतरनी होगी।
बदनीयत वाले हाथों की-
नस-नस आज कुचलनी होगी।

निज अस्तित्व की रक्षा हित-
ये शुरुआत करेगा कौन?
कब तक कोई रहे यूँ मौन।

विकृत सोच वाले दिमाग का-
हमको साँचा बदलना होगा।
स्वच्छन्दता सिखलाने वाली-
शिक्षा का ढाँचा बदलना होगा।

फिल्म और टीवी वालों की-
आचार संहिता बनानी होगी।
संयम और सदाचार पर-
देश की नींव जमानी होगी।

इस बीमारी की जड़ पर-
कुठाराघात करेगा कौन?
आओ सब छोड़ो अपना मौन।

घर विद्यालय दोनों में ही-
नैतिकता की घुट्टी पिलानी होगी।
गृहस्थ आश्रम प्रवेश से पहले-
'संस्कार विधि' पढ़ानी होगी।

पंच-महायज्ञों के द्वारा-
मन की मैल जलानी होगी।
स्वच्छ-स्वस्थ समाज हेतु-
अब वैदिक रीति चलानी होगी।

बहुत सोच लिया, सोचना छोड़ो,
ये शुरुआत करेगा कौन?
आओ तोड़ें अपना मौन।

घर-घर में मर्यादा होगी,
आपस में अटूट होगा विश्वास।
संयम-सदाचार की गन्ध से-
महकेंगे हर ओर पलाश।

रिश्तों की नाजुक डोरी को-
कहो फिर छेड़ेगा कौन
आओ तोड़ें अपना मौन

सुनपेड, वल्लभगढ़, हरि.

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट

पुस्तक का नाम	**वास्तविक मूल्य रुपये**	**छूट के साथ मूल्य रुपये**
अष्टाध्यायी भाष्य (तीनों भाग)	५००	३५०
महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार (दोनों भाग)	८००	५००
कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर (दोनों भाग)	९५०	६००
डॉ. धर्मवीर का सम्पादकीय संकलन (तीन भाग)	५००	२५०
पण्डित आत्माराम अमृतसरी	१००	७०
महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ	१५०	१००
वेद पथ के पथिक	२००	१००
महर्षि दयानन्द के हस्तलिखित-पत्र	२००	१००
स्तुतामया वरदा वेदमाता	१००	७०

यजुर्वेद भाष्य (महर्षि दयानन्द सरस्वती) पृष्ठ संख्या- २१९७, चारों भागों का मूल्य = १३००/-
डाक-व्यय सहित विशेष छूट पर उपलब्ध मूल्य = १०००/-

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करें:- दूरभाष - 0145-2460120

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

खाताधारक का नाम - **वैदिक पुस्तकालय, अजमेर।**

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

लेखकों से निवेदन

- लेखक कृपया अपने मौलिक व अप्रकाशित लेख ही भेजें।
- लेखक अपना पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या लेख के साथ अवश्य लिखें।
- परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।
- अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटायी नहीं जाती हैं।
- रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।
- स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है।

-सम्पादक

जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन-पाठन रूप यज्ञ कर्म्म करने वाला मनुष्य है वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा संतोष करने वाला होता है इससे ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२७

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते?

तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें, इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

परोपकारिणी सभा की गतिविधियाँ

परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित उनकी उत्तराधिकारिणी सभा है और केवल नाम से ही नहीं, बल्कि अपने कार्यों से भी वह ऋषि के उत्तराधिकार के दायित्व को पूर्णतया निभा रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती

ने इस सभा की स्थापना के समय तीन उद्देश्य रखे थे।

१. वेदादि सत्यशास्त्रों का प्रकाशन २. विद्वान् उपदेशक तैयार करके देश-विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार एवं ३. आर्यावर्त्तीय दीन-दरिद्रों की सेवा।

इन सभी कार्यों को सभा अपने विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से पूरा करने में सर्वसामर्थ्य से लगी हुई है। यद्यपि सभा के पास आर्थिक आय का कोई स्थाई माध्यम नहीं है, पुनरपि ऋषिभक्तों एवं आर्यजनों के सहयोग और विश्वास पर ही सभा ने बड़े-बड़े कार्यों को प्रारम्भ किया और निरन्तर कर भी रही है। आचार्य डॉ. धर्मवीर जी, जो कि वर्तमान में परोपकारिणी सभा के प्रधान एवं मूल स्तम्भ थे, उनका कहना था कि ''**कार्य यदि अच्छा है तो उसे प्रारम्भ कर देना चाहिये, सहयोग तो स्वयं ही मिल जाता है।**'' यही शैली अपनाकर आज भी वैदिक विचार के प्रचार का कार्य निरन्तर जारी है। डॉ. धर्मवीर जी के जाने से सभा को बड़ा आघात अवश्य लगा है, परन्तु आर्यों का स्नेह, भरोसा उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्यों को रुकने नहीं देगा-ऐसा सभा को पूर्ण विश्वास है।

परोपकारिणी सभा आज अनेक कार्यों, माध्यमों से इस वेद प्रचार यज्ञ में लगी है, जिसकी सूची यहाँ दी जा रही है-

भव्य ऋषि उद्यान आश्रम, अतिथि यज्ञ, भोजनशाला, गौशाला, वानप्रस्थ एवं संन्यासाश्रम, गुरुकुल, परोपकारी पत्रिका, प्रकाशन, योग साधना एवं चरित्र निर्माण शिविर, सत्यार्थ प्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का नि:शुल्क वितरण, पाण्डुलिपियों का डिजिटलाइजेशन, पुस्तकालय, औषधालय, देश-देशान्तरों में वेद-प्रचार, आयुर्वेदिक औषधालय।

गुरुकुल के लिये प्रवेश-सूचना

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान-अजमेर में वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के उपदेशक तैयार करने हेतु उपदेशक कक्षा में प्रवेश प्रारम्भ हैं।

प्रवेशार्थी की न्यूनतम आयु १४ वर्ष तथा कक्षा आठ या उससे अधिक उत्तीर्ण हो। आर्ष-पद्धति से संस्कृत व्याकरण, दर्शन, उपनिषद्, वक्तृत्व कला तथा महर्षि निर्दिष्ट पाठ्यक्रम के अध्यापन की व्यवस्था है।

गुरुकुल में अध्यापन, भोजन एवं आवास **नि:शुल्क** है।

प्रवेश के इच्छुक अभ्यर्थी सम्पर्क करें-

आचार्य, आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर।

दूरभाष- ०८८२४१४७०७४, ०१४५-२४६०१६४, ०१४५-२६२१२७०

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091 email : psabhaa@gmail.com

दानदाताओं की सूची

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ मार्च २०२१ तक)

१. श्रीमती अर्चना सिंह गाजियाबाद २. कु. उन्नति वर्मा, सोजत सिटी ३. श्री कपिल वर्मा, सोजत सिटी ४. श्री माणकचन्द जैन, छोटी खाटु।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गोशाला संचालित है। गोशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गो-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गोशाला के दानदाता

(१ से १५ मार्च २०२१ तक)

१. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला सिटी २. श्री राजेश त्यागी, अजमेर ३. श्रीमती मिथिलेश पाञ्चाल, अजमेर ४. श्री चन्द्रसेन हरिसिंघानी, अहमदाबाद ५. श्री हरसहाय सिंह आर्य, बरेली ६. श्री माणकचन्द जैन, छोटी खाटु ७. श्री सत्यनारायण राठी, अजमेर ८. श्री गुलशनस्वरूप कालरा, पंचकुला।

अन्य प्रकल्पों हेतु सहयोग राशि

१. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला सिटी २. श्री किशनसिंह गहलोत, अजमेर ३. श्री युगलकिशोर पाण्डे, अजमेर ४. श्री चिन्मय दुबे, जयपुर ५. श्री सूरजनारायण लखोटिया, अजमेर ६. सूबेदार भीष्मदेव आर्य, मथुरा ७. श्री पंकज दीवान, दिल्ली ८. श्रीमती आशा आर्य, रोहतक ९. महात्मा जबरसिंह, सहारनपुर १०.श्री जयपाल सिंह, सहारनपुर ११. मास्टर जयकुमार, सहारनपुर १२. श्री ताराचन्द, सहारनपुर १३. श्री चन्द्रघोष, शामली १४. मुनि मोल्हड़ सिंह आर्य, सहारनपुर १५. श्री नीरज व पंकज धींगड़ा, गुरुग्राम १६. श्री सुमित व पुनीत वर्मा, गुरुग्राम १७. श्री विनोद मैहत्रा, गुरुग्राम १८. श्री महेन्द्र कुमार, गुरुग्राम १९. श्री हरीश कक्कड़, गुरुग्राम २०. श्रीमती सरोज कक्कड़, गुरुग्राम २१. श्री ध्रुव कक्कड़, गुरुग्राम २२. श्री अशोक कुमार, गुरुग्राम २३. श्री नरेन्द्र आर्य, गुरुग्राम २४. डॉ. सुभाष कुमार, गुरुग्राम २५. श्रीमती गीता, फरीदाबाद २६. श्री सरपंच राजेश, फरीदाबाद २७. श्री प्रमोद यादव, गुरुग्राम २८. श्रीमती शान्ता कुमारी, गुरुग्राम २९. श्री मेघपाल, फरीदाबाद ३०. श्री रमेश चन्द्र, फरीदाबाद ३१. महाशय तेजवीर, फरीदाबाद ३२. पं. जगराम, फरीदाबाद ३३. सरपंच श्री सुरेन्द्र, फरीदाबाद ३४. श्री जगराम पटवारी, फरीदाबाद ३५. मास्टर धीरसिंह, फरीदाबाद ३६. श्री ओमपाल सिंह, फरीदाबाद ३७. श्री अमरपाल सिंह, फरीदाबाद ३८. श्रीमती प्रीतिपाल सिंह, फरीदाबाद ३९. श्री कृष्णपाल सिंह फरीदाबाद ४०. श्री सत्यपाल सिंह, फरीदाबाद ४१. श्री सतेन्द्र सिंह भाटी, फरीदाबाद ४२. श्री चन्द्रसिंह, फरीदाबाद।

पढ़ाने में लाड़न नहीं करना योग्य है!

उन्हीं के सन्तान विद्वान्, सभ्य और सुशिक्षित होते हैं, जो पढ़ाने में सन्तानों का लाड़न कभी नहीं करते, किन्तु ताड़ना ही करते हैं, परन्तु माता-पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें, किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास २)

'सत्यार्थ प्रकाश' एवं 'महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' आर्यों का ब्रह्मास्त्र है। ऐसा ब्रह्मास्त्र, जिसने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अन्धश्रद्धा, अविवेक और पाखण्ड मानव समाज में सहज ही पनपने वाली समस्या है, इसलिये प्रत्येक काल, प्रत्येक स्थान और प्रत्येक परिस्थिति में इन समस्याओं के उन्मूलन की आवश्यकता है-अत: 'सत्यार्थ प्रकाश' की आवश्यकता भी सदैव ही अनिवार्य रहेगी, परन्तु यह विचार जन-जन तक पहुँचे, तो ही लाभकारी होगा। इसी को ध्यान में रखते हुए परोपकारिणी सभा ने ७ वर्ष पूर्व 'विश्व पुस्तक मेला' दिल्ली में प्रतिवर्ष 'सत्यार्थप्रकाश' के साथ 'महर्षि का जीवन-चरित्र' एवं 'आर्याभिविनय' पुस्तक का नि:शुल्क वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है। इस कार्य के परिणाम भी बहुत सुखद रूप में सामने आये हैं। पुस्तक में कई व्यक्ति आकर कहते हैं कि हमारे पास यह पुस्तक है, हम पिछले वर्ष ले गये थे।

प्रत्येक आर्यमात्र की यह इच्छा होगी कि वह भी इस ग्रन्थ को वितरित कर पुण्य का भागी बने। इसके लिये सभा प्रत्येक आर्य को इस महायज्ञ में सम्मिलित करना चाहती है। प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ में अपनी आहुति दे तो यज्ञ और अधिक भव्य एवं विस्तृत हो जाता है।'सत्यार्थप्रकाश' 'महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र' के नि:शुल्क वितरण रूपी यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिये आप अपने सामर्थ्यानुसार सहयोग दे सकते हैं। परोपकारिणी सभा की ओर से ये पुस्तकें बड़े अक्षरों में, बढ़िया कागज पर, सजिल्द छापी जाती हैं, जिससे नये व्यक्ति के लिये भी पुस्तक संग्रहणीय बन जाती है। एक सैट की छपाई का खर्च लगभग १५० रु. आता है। **यदि कोई व्यक्ति अपनी सात्त्विक भावना से केवल २० पुस्तकें (इससे अधिक कितनी भी) ही वितरित करवाना चाहता है, तो सभा उतनी प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित करेगी। इसी प्रकार ३०, ५०, १००, १००० आदि।**

१५० रु. प्रति के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं। आहुतियाँ जितनी अधिक होंगी, यज्ञ का फल भी उतना ही अधिक होगा।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थप्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं। यह यज्ञ आपका है, प्रत्येक आर्य का है। अत: प्रत्येक आर्य इसमें अपनी आहुति अवश्य दे।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	३०००/- रु.
	३० प्रतियाँ	४५००/- रु.
	५० प्रतियाँ	७५००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	१५०००/- रु.
	५०० प्रतियाँ	७५०००/- रु.
	१००० प्रतियाँ	१,५०,०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी और दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। दान अक्टूबर माह के अन्त तक भिजवा देवें, ताकि प्रतियों की संख्या निर्धारित करके उन पर दानदाताओं का नाम अंकित किया जा सके। धन्यवाद।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सबको उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४